SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 02 • APRIL 2026

हिन्दी मासिक

अप्रैल 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

हमारी ज़िम्मेदारी

अल्लाह तआला ने हमको इसलिए पैदा नहीं किया कि हम केवल अपनी ज़िन्दगी जी लें और हम ये समझें कि हमने अपना हक़ अदा कर दिया, हमारी एक ज़िम्मेदारी है, हम जिस उम्मत से सम्बन्ध रखते हैं, वह उम्मत "उम्मते दअवत" है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिनको अल्लाह ने आखिरी शरीयत अता फरमाई, अब उस शरीयत को लेकर चलना और उस दीन की दअवत देना, इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है।

(हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी)

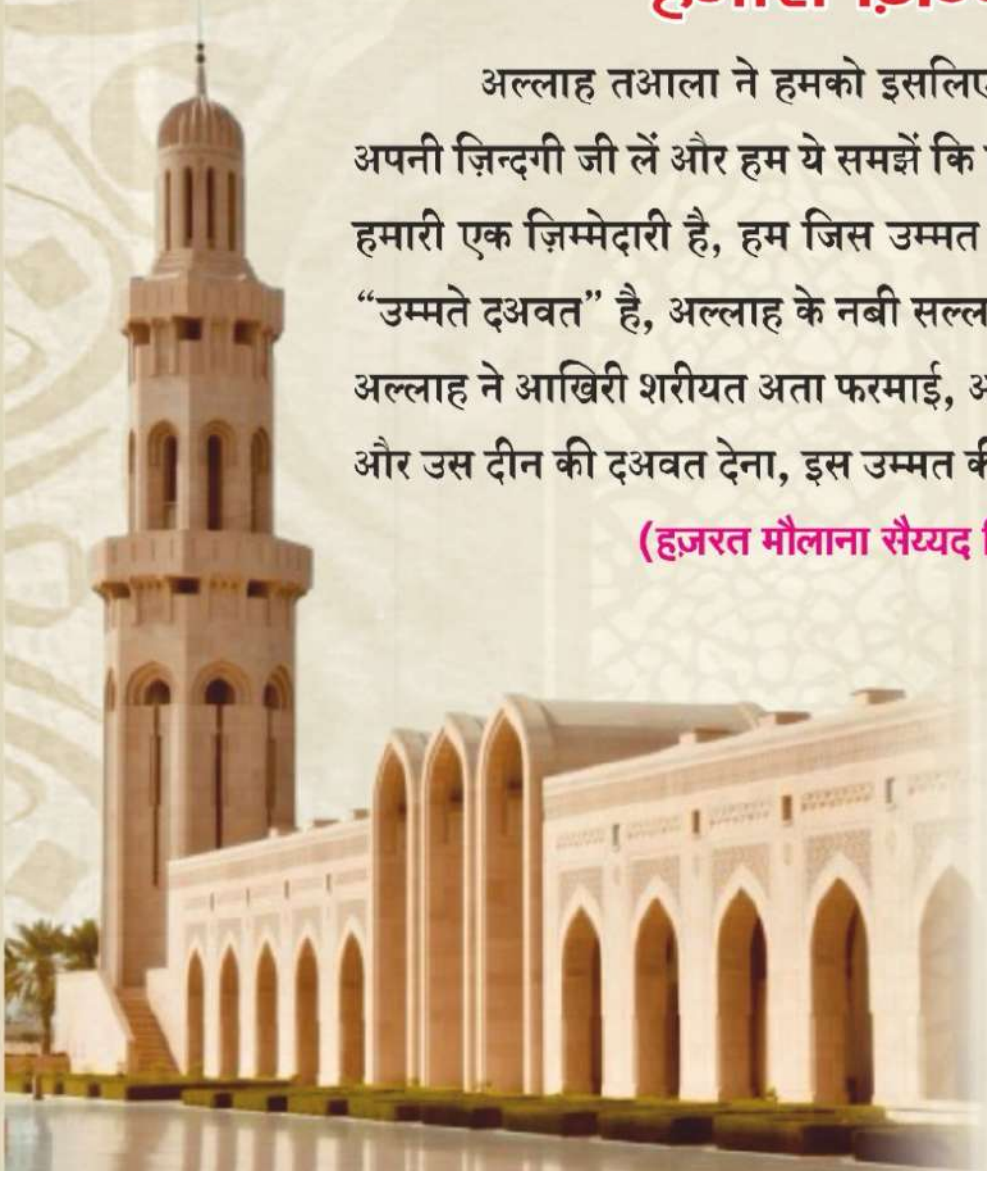

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक)	60 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अप्रैल 2026 वर्ष 25 अंक 02

न्याय

समाज की सुरक्षा व हित के लिए न्याय का वर्तमान व्यवहार नितान्त आवश्यक है। न्याय व इन्साफ से वंचित समाज प्रगति व उन्नति के मार्ग पर न अग्रसर हो सकता है और न कभी फल फूल सकता है। न्याय, मानव जाति का वह अधिकार है जिसको न धन दौलत से खरीदा जा सकता है और न बल पूर्वक छीना जा सकता है।

(हज़रत मौ0सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लाम अल्लाह का पसंदीदा दीन	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	13
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	16
शादी से अलग होने के लिए	मुनव्वर सुल्तान नदवी	18
इस्लाम और उसकी मानवतावादी	डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	22
समय मूल्यवान है इसे नष्ट न करें	हमीदुल्लाह	24
हँसी दुख का इलाज है	शमश आलम फतेहपुरी	26
बीमार के हुकूक़	अल्लामा सैयद सुलेमान नदवी रह0	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	30
हया की हिफाज़त (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	32
अपना काम खुद करना चाहिए	इदारा	33
रमज़ानुल मुबारक के बाद	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी	35
संसार में सबसे अहम माता–पिता	मुहम्मद इक़बाल नदवी	36
कारख़ाने का चक्कर	मायल ख़ैराबादी	38
स्वास्थ्य	डॉ सूर्यकांत	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-बनी इस्राईलः-

अनुवादः—

और निश्चित रूप से हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया और थल और जल (समुद्र) में उनको सवारी दी और उनको अच्छी—अच्छी रोजी दी और अपनी सृष्टियों में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया(70) जिस दिन हम हर प्रकार के लोगों को उनके पेशवाओं के साथ बुलाएंगे फिर जिनको भी उनका परवाना (आमाल का) दाएं हाथ में मिल गया तो वे लोग (मजे ले लेकर) अपना नाम—ए—आमाल (कर्म—पत्र) पढ़ेंगे और जरा सा भी उनके साथ अन्याय न होगा[1](72) और जो इस दुनिया में अंधा (बन कर) रहा तो वह आख़िरत में भी अंधा होगा और अधिक गुमराह होगा(72) और हो सकता था कि हमने आप पर जो वह्य भेजी है उसके बारे में वे लोग आपको फित्ने में डाल देते ताकि आप उसके अलावा हम पर कुछ और गढ़ लाएं और जब तो वे आपको ज़रूर दोस्त बना लेते(73) और अगर हमने आपको जमाया न होता तो हो सकता था कि आप कुछ थोड़ा उनकी ओर झुक जाते(74) तब तो हम आपको दुनिया व आख़िरत में दोहरा मज़ा चखा देते फिर आपको हम पर कोई मददगार न मिलता[2](75) और क़रीब है कि वे आपको जमीन में डगमगा दें ताकि वहां से आपको निकाल दें और तब तो वे आप के पीछे कुछ ही रह पाएंगे[3](76) आपसे पहले हम जो पैगम्बर भेज चुके हैं उनके साथ भी यही नियम रहा है और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन न पाएंगे[4](77) सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक नमाज़ कायम कीजिए और फज्र की नमाज़ (का ध्यान रखिए) निश्चित ही फज्र का समय फरिश्तों की उपस्थिति का समय होता है[5](78) और रात के कुछ भाग में तहज्जुद अदा कीजिए यह आपके लिए वृद्धि (नफल) है, आशा है कि आपका पालनहार आपको मकाम—ए—महमूद (बहुत ही प्रशंसा वाले मकाम) पर आसीन करेगा(79) और यह दुआ कीजिए कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे सच्चाई के साथ प्रवेश करा और सच्चाई के साथ ही निकाल और अपने पास से मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कर जो सहायक हो[6](80) और ऐलान कर दीजिए कि सत्य आ गया और असत्य मिट गया, असत्य को तो मिटना ही था[8](81) और हम वह कुरआन उतार रहे हैं जो ईमान वालों के लिए शिफा (आरोग्य) और रहमत (दया) है और अन्यायकारियों को इससे और घाटा ही होता है[9](82) और जब हमने इंसान को नेमतें दीं तो उसने मुँह मोड़ा और किनारा कर लिया और जब उसको बुराई पहुँची तो निराश हो गया[10](83) कह दीजिए कि हर व्यक्ति अपनी—अपनी राह चलता है बस तुम्हारा पालनहार खूब अवगत है कि कौन हिदायत की राह पर सबसे आगे है(84) और आपसे रूह (आत्मा) के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए कि रूह (आत्मा) मेरे पालनहार के आदेश का भाग है और तुम्हें थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है[11](85) और अगर हम चाहते तो जो वह्य हमने आप पर की है वह वापस ले लेते फिर उसके बारे में आपको हम पर कोई काम बनाने वाला न मिलता(86) मगर (उसका बाकी रहना) आपके पालनहार की कृपा है, निश्चित ही आप पर अल्लाह की बड़ी ही कृपा

रहती है(87) कह दीजिए कि अगर इंसान और जिन्नात सब इस जैसा कुरआन लाने के लिए एक हो जाएं तो भी इस जैसा नहीं ला सकेंगे चाहे वे एक दूसरे के सहयोगी ही क्यों न हो जाएं(88) और हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर प्रकार के उदाहरण बदल बदल कर बयान कर दिये हैं फिर भी लोगों ने सिवाय इनकार के स्वीकार न किया(89) और वे बोले कि हम तो उस समय तक आपको मानने वाले नहीं जब तक आप हमारे लिए जमीन से कोई स्रोत (चश्मा) न जारी कर दें(90) या आपके लिए खजूर या अंगूर का बाग हो फिर आप उसके बीच से नहरें निकाल दें(91) या जैसा कि आपका विचार है आप हम पर आसमान के टुकड़े गिरा दें या अल्लाह और फरिश्तों को निगाहों के सामने ले आएं(92)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. पहले इन्सान की इज्जत और महानता का वर्णन किया कि यह सब हमने प्रदान किया, अब जो शुक्रगुजार (आभारी) होगा उसका नाम–ए–आमाल दाएं हाथ में होगा और जिसने दुनिया में अल्लाह की निशानियों से मुँह मोड़ा वह आखिरत में उसकी सजा भुगतेगा।

2. इन आयतों में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दृढ़ता और महानता को स्पष्ट किया गया है, मुश्रिकों ने डर और लालच के द्वारा हर सम्भव प्रयास करके यह चाहा कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तौहीद और आखिरत के संदेश में कुछ परिवर्तन कर दें ताकि मुश्रिकों के पैतृक दीन और प्राचीन की झूठी कल्पनाओं से टकराव समाप्त हो जाए, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हर प्रयास व प्रस्ताव को ठुकरा दिया और वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विचारों में हलका सा लोच पैदा करने में भी सफल न हो सके, असत्य की ओर थोड़ा झुकाव होने पर दोगुने अजाब की वईद (धमकी) पैगम्बर को संबोधित करके उम्मत (मुस्लिम सम्प्रदाय) को सावधान करने के लिए दी गई है।

3. पवित्र मक्के में मुश्रिकों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रहने न दिया और आप सल्ल0 हिज़रत कर गये लेकिन कुछ ही वर्षों में उन सबको भी यहां से निकलना पड़ा और पवित्र मक्का विजय हुआ और उसके अगले वर्ष सारे शिर्क और कुफ्र करने वालों को वहां से निकलने का आदेश दे दिया गया।

4. यही नियम रहा है कि जब किसी पैगम्बर को बस्ती में रहने न दिया गया तो बस्ती वाले खुद न रहे।

5. सूरज ढलने से रात के अंधियारे तक चार नमाजें करीब–करीब होती है, उनकी ओर इशारा है और फज्र का अलग से जिक्र है इसलिए कि इसमें और दूसरी नमाजों में अंतराल होता है और कठिनाई भी इसमें अधिक है, फज्र के समय को उपस्थिति का समय इसलिए कहा गया कि इस समय रात और दिन दोनों कार्यावधि के फरिश्ते उपस्थित रहते हैं।

6. तहज्जुद के उल्लेख के बाद दुआ (प्रार्थना) का उल्लेख है इसलिए कि तहज्जुद दुआ के स्वीकार होने का समय होता है, इस दुआ का आदेश हिजरत के अवसर पर हुआ था, पवित्र मदीने में प्रवेश करने और मक्के से निकलने की ओर इसी में संकेत है, लेकिन शब्द आम हैं इसलिए कहीं भी पहुंचते समय यह दुआ की जा सकती है, मकाम–ए–महमूद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह विशेष पदवी है जिसके

शेष पृष्ठ ...08....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

बन्दे की सोच और गुमान के मुताबिक अल्लाह का फैसलाः-

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः– अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान रखता है, जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, और अगर वह मुझे अपने दिल में अकेले में याद करता है तो मैं उसको अपने दिल में अकेले में याद करता हूँ और अगर वह मुझे महफिल में याद करता है तो मैं उसको उससे बेहतर महफिल में याद करता हूँ।

(बुखारी व मुस्लिम)

अल्लाह की याद से तरक्कीः–

हजरत अबू हुरैरः (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः– मुफर्रिदून आगे बढ़ गए। सहाबा किराम ने पूछाः मुफर्रिदून कौन लोग हैं? आप सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करने वाले मर्द और औरतें।

(मुस्लिम)

हजरत अब्दुल्लाह बिन बुस रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से कहाः ऐ अल्लाह के नबी! इस्लाम के अहकामात (आदेश–निर्देश) तो बहुत सारे हम पर अनिवार्य हैं, कोई ऐसी खास से भी खास बात बताइये कि मैं उसको पाबन्दी के साथ करके अल्लाह की खुशी हासिल कर सकूँ। आप सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह के जिक्र और गुणगान से अपनी ज़बान को तर रखो, अर्थात सदैव अल्लाह का गुणगान करते रहा करो।

(तिर्मिजी)

''ला इला ह इल्लल्लाह'' की श्रेष्ठताः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना कि सबसे बेहतर जिक्र ''ला इलाह इल्लल्लाह'' है।

(तिर्मिजी)

''ला इला ह इल्लल्लाह'' तमाम अल्लाह वाले इस बात से सहमत हैं कि दिल को पाक और पवित्र करने, और हर तरफ से हटा कर अल्लाह से जोड़ने में सबसे ज़्यादा प्रभावशाली इसी कलिमे, का जिक्र है, एक काफिर (नास्तिक, खुदा को न मानने वाला) और मुशरिक (बहुदेववादी, अल्लाह के साथ दूसरे की भी पूजा–अर्चना करने वाला और उसका साझी ठहराने वाला भी इसको दिल की गहराई से निःस्वार्थ होकर इसके मआनी और भावार्थ को समझते हुए कहे तो उसके सारे पाप एक दम से पल भर में खत्म हो जाते हैं और वह ऐसा हो जाता है कि जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से मासूम व बेगुनाह और निर्दोष पैदा हुआ है, उसके सारे के सारे पाप धुल जाते हैं।

हकीमुल इस्लाम हजरत शाह वलीयुल्लाह रह० ने इस पाक और पवित्र कलिमे की तीन खास बातें बताई हैंः–

पहली बात यह है कि शिर्के जली (बड़े शिर्क) को खत्म कर देता है। दूसरी बात यह है

कि वह शिर्के खफी (छोटे–मोटे शिर्क) को भी खत्म कर देता है। और तीसरी बात यह है कि बन्दा और मअरेफते इलाही (ब्रह्मज्ञान) के बीच जितने भी आड़ और रुकावटें हैं सभी को खत्म कर देता है। और खुदा को पहचानने और उससे करीब होने का एक साधन और माध्यम बन जाता है।

''सुब्हानल्लाह'' की श्रेष्ठताः–

हजरत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः दो कलिमे ऐसे हैं जो जबान पर तो हल्के–फुल्के हैं पर वजन में बहुत भारी होंगे और अल्लाह को बहुत प्यारे हैं, वह यह हैं ''सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अजीम''

(बुखारी व मुस्लिम)

''लाहौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि'' की श्रेष्ठताः–

हजरत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 से रिवायत है, फरमाते हैं कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– क्या मैं तुमको जन्नत के खजानों में से एक ख़ज़ाना न बता दूँ? मैंने कहा, अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं! आप सल्ल0 ने फरमाया– ''ला हौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहि'' है।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से रिवायत की है, फरमायाः जिसने ''ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहु, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु व अला कुल्लि शैइन कदीर'' दस बार पढ़ा तो वह उस आदमी के बराबर हो गया जिसने हजरत इस्माईल अलै0 की संतान में से चार शख्सों को आज़ाद किया हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि0 बयान करती हैं कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया तुम्हारे पास से जाने के बाद मैं ने चार कलिमात (बातें) तीन बार कहीं, अगर इनकी तुलना उन कलिमात से की जाए जो तुमने पूरे दिन में कहे हैं तो इन चार कलिमात (बातों) का वजन बढ़ जाए।

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अदद खल्किही व रिजा नफ़सिही व जिनत अर्शिही व मिदा द कलिमातिही''।

(मुस्लिम)

❖❖❖

पृष्ठ .....06... का शेष

फलस्वरूप आपको ''शिफाअत–ए–कुबरा'' (सबसे बड़ी सिफारिश का अधिकार) प्राप्त होगी।

7. इसमें फत्ह–ए–अजीम (महान विजय) का शुभ समाचार है, अतः कुछ ही वर्षों में पवित्र मक्का विजय हुआ और ''यद खुलू–न–फी दीनिल्लाहि अफवाजा'' (वे अल्लाह के दीन में भारी संख्या में प्रवेश कर रहे हैं) का दृश्य सामने था।

8. जो मानते हैं उनके लिए दीन व दुनिया में रहमत (दया) और हर प्रकार के आंतरिक और बाहरी बीमारियों से निजात है और जो हटधर्मी और जिद में पड़े हैं उन पर हुज्जत पूरी हो रही है और उनको घाटा ही घाटा है।

9. दोनों हालतों में उसने अपना घाटा किया, नेमतों पर आभारी होता और उनको स्वीकार करता जिनमें सबसे बड़ी नेमत कुरआन है तो पालनहार से करीब होता, मुसीबतों और कठिनाइयों में अल्लाह की दया का सहारा लेता तो क़रीब होता, लेकिन उसने दोनों हालतों में दूरी अपनाई।

10. अतः लाख खोज–बीन के बाद भी कोई उसकी वास्तविकता तक न पहुँच सका।

❖❖❖

सम्पादकीय

इस्लाम, अल्लाह का पसंदीदा दीन

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

धरती पर इंसान के क़दम आने से पहले अल्लाह ने इन्सान के जीवन यापन के लिए सारे साधन जुटाए, दरया पहाड़ पेड़ पौधों से इस दुनिया को सुसज्जित किया सूर्य, चन्द्रमा से इस धरती को प्रकाशित किया, ज़मीन को उपजाऊ बनाया, ये सब इन्सान ही के लिए था और उसके सम्मान में था, अल्लाह ने इसका ज़िक्र अपनी किताब कुरआन शरीफ़ में किया हैः–

अनुवादः–''और निश्चित रूप से हमने आदम की सन्तान को सम्मान प्रदान किया और थल और जल में उनको सवारी दी और उनको अच्छी–अच्छी रोज़ी दी और अपनी सृष्टियों में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया।''
(सूरः बनी इस्राईल आयत नं0 70)

जिस अल्लाह ने आदम की सन्तान इन्सान के लिए एक सम्मानीय और सुखदायी जीवन व्यतीत करने का प्रबंध किया, उसी दयावान अल्लाह ने इन्सान के लिए इस्लाम जैसा आदर्श धर्म भी पसन्द फ़रमाया और उसने साफ़ बता दिया कि दीन केवल इस्लाम है, इसके अतिरिक्त किसी दूसरे दीन को वह स्वीकार नहीं करता।''
(सूरः आले इमरान आयत नं0 19)

इस्लाम धर्म के विश्वास और पुष्टि के लिए इतना काफ़ी है कि प्रथम दिन से अल्लाह के सबसे पहले नबी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से और अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक जिनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है उन सबने इन्सानों को दीन इस्लाम की दअ़वत दी हर नबी अल्लाह का दूत और प्रतिनिधि होता है जिस पर अल्लाह की ओर से ''वही'' (ईश्वरीय वाणी) आती है। अल्लाह ने फ़रमाया हमने रसूल को इसलिए भेजा कि उसके आदेशों का पालन किया जाए। इस्लामी जीवन में अक़ीदे (विश्वास) की मौलिक हैसियत है जिसके अक़ीदे में ख़लल, विश्वास में विकार और ईमान में बिगाड़ हो उसकी न कोई इबादत मक़बूल, न उसका कोई अमल सही माना जाएगा। और जिसका अक़ीदा दुरुस्त और ईमान सही हो उसका थोड़ा अमल भी बहुत है। इसलिए सबसे पहले उन बातों को मालूम करने की ज़रूरत है जिन पर अक़ीदा रखना, ईमान लाना और उसके अनुसार आचरण करना आवश्यक है और जिन पर विश्वास के बिना कोई व्यक्ति मुसलमान कहलाने का अधिकारी नहीं, ये वह शर्त है जो तमाम दुनिया के मुसलमानों के लिए एक समान है।

इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मों के प्रोग्राम रीति रवाजों और परमप्राओं के सहारे चलते हैं। इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा अक़ीद–ए–तौहीद है यानी अल्लाह को एक जानना और एक मानना, इबादत केवल उसी की की जाएगी उसकी इबादत में कोई दूसरा साझीदार नहीं, अल्लाह के सिवा कोई ऐसी हसती नहीं है जो इबादत और बन्दगी के योग्य हो बस अल्लाह ही की एक अकेली ऐसी हस्ती है जो इबादत और बन्दगी के लाएक़ है क्योंकि वही हमारा और सबका पैदा करने वाला और स्वामी है। वही पालने वाला और रोज़ी देने वाला है, वही मारने वाला और जिलाने वाला है, बीमारी और तन्दुरुस्ती, अमीरी और गरीबी और हर तरह का बनाव और बिगाड़ और नफ़ा और नुक़सान उसी के कब्ज़–ए–कुदरत में है, उसके सिवा ज़मीन व आसमान में जो हस्तियाँ हैं, चाहे वह इन्सान हों या फ़रिश्ते सब उसके बन्दे और उसके पैदा किये हुए हैं उसकी ख़ुदाई में कोई उसका शरीक़ और साझी नहीं है और न उसके हुकमों में किसी को उलट पलट का अधिकार है और न उसके कामों में किसी का हस्तक्षेप करने का साहस है, अतः बस वही और केवल वही इसका योग्य है कि उसकी इबादत की जाए और उसीसे लौ लगाई जाए और मुसीबतों और परेशानियों में उसी से दुआ की जाए। वही वास्तविक मालिक और हाकिम है यानी सारी दुनिया का बादशाह है

और सब हाकिमों से बालातर और बड़ा हाकिम है इसलिए ज़रूरी है कि उसके हर हुक्म को माना जाए और पूरी वफादारी के साथ उसके हुक्मों पर चला जाए और उसके हुक्म के मुक़ाबिले में किसी दूसरे का कोई हुक्म हरगिज़ न माना जाए चाहे वह कोई हो अगरचि अपना बाप ही हो या वक़्त का हाकिम हो या बिरादरी का चौधरी हो या कोई प्यारा दोस्त हो या स्वयं अपने दिल की इच्छा हो और अपने जी की चाहत हो जब हमने जान लिया और मान लिया कि बस एक अल्लाह ही इबादत और बन्दगी के लायक़ है और हम सिर्फ़ उसी के बन्दे हैं तो चाहिए कि हमारा अमल भी उसी के अनुसार हो और दुनिया के लोग हमें देख कर समझ लिया करें कि ये सिर्फ़ अल्लाह के बन्दे हैं। जो अल्लाह के हुक्मों पर चलते हैं और अल्लाह ही के लिए जीते और मरते हैं।

उपरोक्त बातें जो कही गई हैं वह इस्लाम के बुनियादी अक़ीद–ए–तौहीद के अन्तर्गत हैं, तौहीद के बाद इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा अक़ीद–ए– रिसालत है।

मानव इतिहास में कोई ज़माना ऐसा नहीं है जिसमें अल्लाह ने इन्सानों की रहबरी, पथ प्रदर्शन और निर्देश के लिए अपना कोई रसूल या नबी न भेजा हो अल्लाह के सबसे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जिनकी नबूवत और रिसालत रहती दुनिया तक के लिए है आपके बाद कोई नबी नहीं आयेगा, आप सल्ल0 को अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ़ में ''रहमतुल लिलआलमीन'' और ''ख़ातमुन नबीयीन'' की उपाधि प्रदान की, आप सल्ल0 पर दीन इस्लाम मुकम्मल हुआ जिसका ऐलान अल्लाह तआला ने ''हज्जतुल वदअ़'' के अवसर पर किया।

अनुवादः आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी और दीन के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसन्द कर लिया''।

(अलमाइदा आयत नं03)

इस आसमानी ऐलान के बाद दीन इस्लाम में कोई कमी बेशी नहीं होगी, अल्लाह के आदेशों को उसके बन्दों तक पहुंचाने के सबसे बड़े विश्वास पात्र साधन नबी हैं, नबी अगरचि इन्सान होता है, परन्तु वह एक आदर्श इन्सान होता है उसकी ज़िन्दगी एक साफ़ शफ़्फ़ाफ आइने के समान होती है जिस पर कोई दाग़ धब्बा नहीं होता, इसीलिए अल्लाह ने उसका अनुसरण करने का आदेश दिया है।

अनुवादः– ''निश्चित रूप से तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन आदर्श मौजूद हैं इसलिए कि जो अल्लाह और आखिरत के दिन की उम्मीद रखता हो और उसने अल्लाह को याद किया हो''।

(सूरः अल–अहज़ाब आयत नं0 21)

नबी की शान ये होती है कि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहता वह जो कुछ कहता और बोलता है वह अल्लाह के आदेश और आज्ञा से बोलता है।'' और वह इच्छा से नहीं कहता वह तो मात्र ''वह्य'' है जो उन पर की जाती है''।

(सूरः अलनज्म आयत नं0 2–3)

वर्तमान काल अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की नबूवत और रिसालत का ज़माना है आपके रसूल होने का मतलब ये है कि अल्लाह तआला ने आप सल्ल0 को दुनिया की हिदायत के लिए भेजा था और आपने जो कुछ बतलाया और जो ख़बरें दीं वह सब सही और बिल्कुल सच हैं जैसे कुरआन शरीफ का अल्लाह की ओर से होना, फ़रिशतों का होना, क़यामत का आना, क़यामत के बाद मुर्दों का फिर से ज़िन्दा किया जाना और अपने अपने आमाल के अनुसार जन्नत या दोज़ख में जाना आदि।

हुजूर सल्ल0 के रसूल होने का मतलब यही है कि आपने जो बातें दुनिया को बतलाई हैं वह अल्लाह की ओर से विशेष, विश्वसनीय, और सही हैं, जिनमें किसी शक शुब्हे की गुन्जाइश नहीं, और इसी प्रकार आपने लोगों को जो शिक्षाएं दीं और आदेश दिये वह सब वास्तव में अल्लाह की शिक्षाएं और आदेश हैं जो आप पर ''वह्य'' किये गये थे, इसी से आपने समझ लिया होगा कि किसी को रसूल मानने से स्वयं में अनिवार्य हो जाता है कि उसके हर आदेश और हर हुक्म को माना जाए क्योंकि अल्लाह तआला

किसी को अपना रसूल इसीलिए बनाता है कि उसके द्वारा अपने बन्दों को वह आदेश भेजे जिन पर वह बन्दों को चलाना चाहता है।

क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है:–

और हमने हर रसूल को इसीलिए भेजा कि हमारे फ़रमान से उसका आज्ञा पालन किया जाए यानी उसके हुक्मों को माना जाए। रसूल पर ईमान लाने और उसको रसूल मानने का उद्देश्य और मतलब ही यही होता है कि उसकी हर बात को सत्य माना जाए, उसकी शिक्षा और आदेश को अल्लाह की शिक्षा और आदेश समझा जाए और उसके हुक्मों पर चलने का फैसला कर लिया जाए।

अक़ीद–ए–तौहीद और अक़ीद–ए–रिसालत के बाद इस्लाम का महत्वपूर्ण अक़ीदा, आलमे आखिरत का अक़ीदा है, इन्सान दुनिया में थोड़े दिन रहे या बहुत दिन रहे लेकिन मरना यक़ीनी है अल्लाह ने बार बार इस वास्तविकता को अपनी किताब कुरआन में बताया है ''कि हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है'' मर कर हम कहां जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें याद रखना चाहिए कि अपने स्वामी और पालनहार अल्लाह के सामने जाना है और अपनी दुनियावी ज़िन्दगी का हिसाब देना है यह बहुत कठिन घड़ी होगी जो टल नहीं सकती, उस घड़ी के आने से पहले हम तैयारी कर सकते हैं, अल्लाह तआला ने हमें होशियार किया है और चेतावनी दी है– ''क्या तुमने ये समझ रखा है कि हमने तुमको यूँ ही पैदा कर दिया और तुम पलटकर हमारे पास नहीं आओगे''।

(सूरः मोमिनून आयत न0 114)

मरने के बाद क्या होता है और क्या होगा, ये बात सिर्फ़ अल्लाह ही को मालूम है और उसके बतलाने से उसके नबियों को मालूम होती है अल्लाह के हर नबी ने अपने अपने वक़्त में अपनी क़ौम को और अपनी उम्मत को अच्छी तरह बतलाया और जतलाया था कि मरने के बाद किन किन मन्ज़िलों व परिस्थितियों से तुम को गुज़रना होगा और दुनिया में किये हुए तुम्हारे आमाल का बदला तुमको हर मन्ज़िल में किस तरह मिलेगा, अल्लाह के नबी हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि अल्लाह के आखिरी नबी और रसूल हैं और उनके बाद अब क़यामत तक कोई नबी आने वाला नहीं है। इसलिए आपने मरने के बाद की सब मन्ज़िलों का बयान बहुत तफ़सील से किया है। अगर उस सबको इकट्ठा किया जाय तो एक बहुत बड़ा दफ़्तर तैयार हो सकता है। कुरआन शरीफ़ में और हदीसों में जो कुछ इस बारे में बयान किया गया है, उसका सारांश ये है कि:–

मरने के बाद तीन मन्ज़िलें आने वाली हैं पहली मन्ज़िल मरने के वक़्त से लेकर क़यामत आने तक की है उसको आलमे बरज़ख़ कहते हैं मरने के बाद आदमी का शरीर धरती में दफ़न कर दिया जाए, चाहे नदी में बहा दिया जाए, चाहे जलाकर राख कर दिया जाए लेकिन उसकी रूह किसी हालत में मिटती नहीं। सिर्फ़ इतना होता है कि वह हमारी इस दुनिया से एक दूसरी दुनिया में चली जाती है, वहां अल्लाह के फ़रिश्ते दीन के बारे में उससे कुछ सवाल पूछते हैं, अगर वह सच्चा ईमान वाला है तो वह ठीक ठीक जवाब देता है जिस पर फ़रिश्ते उसको ख़ुशख़बरी सुना देते हैं कि तू क़यामत तक चैन और सुख से रह। और अगर वह ईमान वाला नहीं होता बल्कि काफ़िर (इस्लाम को न मानने वाला) होता है या नाम का मुसलमान या मुनाफिक़ होता है तो उसी समय से सख़्त अज़ाब और दुख में डाल दिया जाता है। जिसका सिलसिला क़यामत तक जारी रहता है, यही बरज़ख़ की मन्ज़िल है जिसका ज़माना मरने के वक़्त से लेकर क़यामत तक है इसके बाद दूसरी मन्ज़िल क़यामत और हश्र की है। क़यामत का मतलब ये है कि एक समय ऐसा आयेगा कि अल्लाह के हुक्म से ये सारी दुनिया एक दम मिटा दी जाएगी जिस तरह बड़े भूचालों में क्षेत्र के क्षेत्र समाप्त हो जाते हैं उसी तरह उस समय सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी और सब चीज़ें एक बारगी मिटा दी जाएंगी फिर एक लम्बा समय गुज़र जाने के बाद अल्लाह तआला जब चाहेगा सब आदमियों को फिर से ज़िन्दा करेगा उस समय सारी दुनिया के अगले पिछले सब इन्सान दोबारा ज़िन्दा हो जाएंगे और उनकी दुनिया

वाली ज़िन्दगी का पूरा हिसाब होगा, इस जांच और हिसाब में अल्लाह के जो बन्दे नजात और जन्नत के हक़दार होंगे उनके लिए जन्नत का हुक्म दिया जाएगा और जो मुजरिम अल्लाह के अज़ाब और दोज़ख के मुस्तहक़ होंगे उनके लिए दोज़ख का हुक्म सुना दिया जाएगा। ये मन्ज़िल मरने के बाद की दूसरी मन्ज़िल है जिसका नाम क़यामत और हश्र है। इसके बाद जन्नती हमेशा के लिए जन्नत में चले जाएंगे जहां सिर्फ सुख और चैन होगा और ऐसे सुख और आनन्द होंगे जो दुनिया में किसी ने नहीं देखे होंगे। और दोज़खी दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे जहां इनको बड़े सख़्त अज़ाब और दुख होंगे। अल्लाह सबको उससे अपनी पनाह में रखे। ये दोज़ख और जन्नत मरने के बाद तीसरी और आख़िरी मंज़िल होगी। और फिर लोग हमेशा हमेशा अपने आमल के मुताबिक़ जन्नत या दोज़ख़ में रहेंगे, इस तीसरी और आख़िरी मंज़िल का नाम आख़िरत है, अब कुछ आयतें और हदीसें भी सुन लीजिए– ''हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है फिर तुम सब हमारी तरफ़ लौटोगे''।

(सूरः अनकबूत आयत न06)

क़यामत का भयंकर दृष्यः–

''ऐ लोगो अपने परवरदिगार से डरो, क़यामत का भूचाल बड़ी भयंकर चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे उस दिन हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते प्यारे बच्चे को भूल जाएगी। और गर्भ वालियों के गर्भ गिर जाऐंगे और तुम देखोगे सब लोगों को नशे की सी हालत में और वास्तव में वह नशे में नहीं होंगे बल्कि अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है।

(सूरः अल–हज)

क़यामत का दिन कितना भीषण और भयानक होगा निम्नलिखित कुरआनी आयतों का अनुवाद पढ़ियेः–

''जब धरती और पहाड़ों पर कँपकपाहट होगी और पहाड़ बहती हुई रेत की तरह हो जाएंगे'' (सूरः मुज़म्मिल)

''वह दिन बच्चों को बूढ़ा बना देगा'' (सूरः मुज़म्मिल)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ि0 से फ़रमाया–

''जो कोई सच्चे दिल से ''लाइलाहा इल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की शहादत (गवाही) दे तो अल्लाह तआला ने दोज़ख़ की आग ऐसे शख़्स पर हराम कर दी है''। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इस सच्ची शहादत ही पर हमारे ईमान और इस्लाम का और हमारी नजात का दारोमदार है, बस चाहिए कि कलिम–ए–शहादत पर ही हमारा पक्का एतिक़ाद और ईमान हो, हमारा इक़रार और एलान हो, हमारी ज़िन्दगी का सिद्धान्त और पूरी दुनिया के लिए हमारा पैग़ाम हो।

जो तू मेरा तो सब मेरा
फ़लक मेरा ज़मीं मेरी
अगर इक तो नहीं मेरा
तो कोई शै नहीं मेरी

❖❖❖

नअ़त

ताबिश महदी देहली

नअते नबी लिखने के लिये
जब ले के कलम हम बैठे हैं
लफजों ने आदाब किया
अफ़्कारे दरख्शां बरसे हैं
सरवरे आलम इस दुन्या में
रहमत बन कर आए हैं
बाबे जिहालत बन्द किया है
हिक़्मत के दर खोले हैं।
फिक्रो नजर की सौगातें दी
दीन दिया कुरआन दिया
दुनिया वालों पर आका ने
क्या क्या हुनर बरसाए हैं
अख्लाको किरदार का जिसके
जिक्र है सारे आलम में
हाए उसी पर जेहल जदों ने
संगे मलामात फेंके हैं
जिन लोगों ने आका के
अख़लाक़े हसन को अपनाया
वह दुनिया में रुश्दो हुदा का
सूरज बन कर चमके हैं
हमको तो बस हुक्मे नबी पर
जान निछावर करनी है
जान की क़ीमत हम क्या जानें
हम तो हुक्म के बन्दे हैं
प्यारे नबी से जलने वाले
सारे जहां में हैं रूस्वा
मश्रिक़ से मग़रिब तक
ताबिश प्यारे नबी के जल्वे हैं

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अबुल फजल और दीन–ए इलाही:–

उत्साहपूर्ण शहरयार को अपनी अच्छाइयों पर कम नज़र है, जो व्यक्ति उनका मुरीद होता है वह उसको स्वीकार करने में देरी करते हैं और कहते है, कि जब हम ही खुद पहुँचे हुए न हों तो कैसे नेतृत्व कर सकते हैं लेकिन यदि किसी माँगने वाले की पेशानी में सच्चाई की निशानी दिखायी देती और उसकी चाहत दिन–प्रतिदिन बढ़ती जाती है तो उसको अपनी मुरीदी स्वीकार कर लेते हैं। इतवार के दिन सूरज की रोशनी में उसकी इच्छा पूरी हो जाती है। इस परेशानी के बावजूद हजारों आदमी अपनी श्रद्धा के साथ मुरीदी के सिलसिले में सम्मिलित होते हैं। यह हमेशा के लिए सौभाग्य प्राप्त करते समय, माँगने वाला अपनी पगड़ी को हाथ पर रख कर अपना सिर मुबारक पैर पर रख देता है और अपनी जबान–ए हाल से कहता है कि मैं अपने भाग्य को पाने और नेतृत्व के बदौलत अपने आप को सजाने और दिखावे से मुँह मोड़ता हूँ कि यह सभी बुराइयों की जड़ हैं और श्रद्धालुओं में सम्मिलित होता हूँ ताकि अमरता का जीवन प्राप्त हो और खुदा को पहिचानने वाला बादशाह अपने पवित्र हाथों से उसका सिर उठाकर पगड़ी उसके सिर पर रखते हैं जिसका अभिप्राय यह होता है कि चाहने वाले की मदद की और हाथ जैसी हस्ती ने अपनी वास्तविक हस्ती को स्वीकार किया और उसको एक चादर या कोई कपड़ा प्रदान करते हैं जिसमें इस्म–ए आजम अर्थात अल्लाहु अकबर लिखा होता है जिसके अर्थ यह होते हैं–

दरगाह के बन्दे, इन अजीबो गरीब हालात को देखकर मार्गदर्शन प्राप्त करते और अल्लाह के कृपा स्रोत से सन्तुष्ट होते हैं।

मुरीद जब आपस में एक दूसरे को देखते हैं तो एक अल्लाहु अकबर और दूसरा जल्लल्लाहू कहता है। इसका मकसद यह है कि लोग अल्लाह की याद में सन्तुष्ट दिल से मीठी बोल बोलें और उनके काम बनते रहें और उस हस्ती के स्रोत को कभी न भूलें। बादशाह का आदेश था कि जो दान सामान्य रूप से मरने के बाद दिया जाता है वह उनके मुरीद अपने जीवन में ही करें। इस तरह परलोक की यात्रा का सामान पहले ही एकत्र कर लें। यह भी आदेश था कि सभी मुरीद अपने जन्मदिन पर एक भोज करें और दस्तरखान पर तरह–तरह के व्यंजन रखें ताकि लम्बी यात्रा के लिए सफर खर्च उपलब्ध हो जाए। मुरीदों को यह आदेश भी था कि माँस खाने से भरसक परहेज करें दूसरों को खिलायें लेकिन खुद हाथ न लगायें। अपने जन्म के महीने में गोश्त के पास भी न जाएँ। मुरीद अपने ज़बीहे के जानवर के पास न जाएँ और न ही उसके माँस को खाने की इच्छा करें। मुरीद लोग कसाई, मल्लाह और चिड़िया के शिकारियों के साथ खाना–पीना न करें। गर्भवती, बूढ़ी और बाँझ औरत और नाबालिग लड़कियों के बिस्तर पर न सोयें।

अकबर के धार्मिक विचारों

का अनुमान आईन–ए–अकबरी के इन अंशों से भी स्पष्ट होता है:

बादशाह अपनी दिल की रोशनी के कारण रोशनी को पसन्द करते है और उस नूर अर्थात उसकी प्रतिष्ठा को खुदा की इबादत और अल्लाह की प्रशंसा बताते हैं। नादान और बुरे दिल के लोग उसको खुदा को भूलना और आप की पूजा कहते हैं। लेकिन बड़े दिल के लोग उसको अच्छा समझते हैं। जब पवित्र गुणों वाली वस्तुओं के बाहरी रूप का सम्मान करना प्रशंसनीय है तो ऐसे बड़े तत्व (अर्थात प्रकाश) का सम्मान करना जो मानवता की पूँजी और उसके अस्तित्व का कारण है, क्यों इसके योग्य न समझा जाए। इसके अतिरिक्त कोई और कम हैसियत की धारणा मन में नहीं आ सकती.....।

इसीलिए जब एक पड़ी दिन शेष रहता है तो खदीव आलिम यदि सवारी पर होते हैं तो नीचे उतर जाते हैं और यदि सोते रहते हैं तो उठ जाते हैं और एकाग्रचित होकर प्रत्यक्ष को परोक्ष के रंग में रंग लेते हैं। सूरज के डूबने के बाद सेवा करने और चाँदी की बारह लगन में कपूर की मोमबत्तियाँ जलाते हैं और बादशाह के सामने लाते हैं। एक अच्छा गाने वाला मोमबत्ती को हाथ में लेकर खुदा का आभार प्रकट करता है और तरह–तरह के गीत गाता है, और अन्त में बादशाह को दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की के लिए दुआ करता है और अन्त में यह कहता है कि गीती खदीव के मीनार का पाया बुलन्द और उसका ताजा विकास हो अर्थात उसकी बुद्धि प्रकाशित हो।

अबुल फजल आईन–ए शबारोजी के शीर्षक के अन्तर्गत लिखता है:

उपकार करने वाले की प्रशंसा करना आवश्यक है। प्रकाशों के प्रकाश अर्थात सूरज की कृपा के वर्णन से प्रत्येक व्यक्ति लाभ प्राप्त करता है और उसकी बरकतों का गिनना संभव नहीं है। सुल्तानों को उस आसमानी तख्त के सुल्तान से गहरा सम्बन्ध है और वह उसी से प्रशिक्षण पाते हैं। यही कारण है कि गीती खदीव आग का सम्मान करते हैं और चिराग की देख–रेख की भी विशेष व्यवस्था करते हैं। आग हो या चिराग हो, सभी प्रकाशित चीजों को उसी सर्वप्रथम प्रकाश के सौन्दर्य की छाया समझते हैं। टेढी सोच और कम बुद्धि वाले लोग जो अन्धविश्वास पर चलते हैं। बादशाह के इस कर्म को आग की पूजा और सूरज की पूजा समझते हैं और हँसते हैं।

आईन–ए अकबरी में दिल आवेज गुफ्तार–ए–शंहशाही के शीर्षक के अन्तर्गत अबुल फजल ने अकबर के जो वाक्य नकल किए हैं उनसे भी अकबर के धार्मिक विचारों का प्रदर्शन होता है जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

1. मनुष्य की श्रेष्ठता बुद्धि के कारण है। मनुष्य को चाहिए कि उसके जंग को दूर करे और उसके आज्ञापालन से मुँह न मोड़े।

2. प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपना मुरीद है। यदि उसके दिल में सही रोशनी मौजूद है तो वह स्वयं मार्गदर्शक है और यदि अपनी बुद्धि की चमक को किसी अपने से अधिक विक्रम की मुरीदी से बढ़ाता है तो वह स्वयं अपना मार्गदर्शक है।

3. अन्धविश्वास की बुराई इससे स्पष्ट है कि यदि अन्धविश्वास बेहतर होता तो पैगम्बर भी अपने पूर्वजों का आज्ञापालन करते।

1. पुराने दार्शनिकों का विचार है कि सबसे कठोर विपदाएँ

पैगम्बरों पर आती हैं। इसके बाद औलिया और फिर हर चरण में नेक लोगों पर आती हैं। मुझको इस बात पर विश्वास नहीं होता कि खुदा के प्रिय बन्दों पर विपदाएँ अवतरित होती हैं। परम्परागत मुल्लाओं ने यह कहा कि यह मात्र खुदा की परीक्षा है। इसपर बादशाह ने कहा कि यह परीक्षा उनके लिए कैसे हो सकती है जो खुली और छिपी बातों के जानने वाले हैं।

2. इंसान के इस व्यवहार पर आश्चर्य होता है कि ऐसे छोटे बच्चों के खतना की सुन्नत को अनिवार्य समझते हैं जो कर्तव्यों का बोझ नहीं ढोया हो।

3. यदि सूअर का हराम होना उसके अपमान के कारण से है तो शेर और इस तरह के और जानवरों के लिए हलाल होना अनिवार्य हैं।

4. कफन–दफन मात्र रस्म की चीज़ है। मुर्दा किस तरह यह बोझ लाद सकता है जिस तरह यह आया उसी तरह उसको जाना चाहिए।

5. बच्चों के बीमार पड़ जाने से आवागमन का कायल होना पड़ता है।

6. आसमानी किताबों में तो यह लिखा है कि पुराने ज़माने में पापियों की सूरत बदलकर बन्दर और सुअर की हो जाती थी। इसपर विश्वास होता है।

7. पिछले ज़माने में कुछ लोग कह गए हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के पाप की सजा कुछ रूप अपनाती है, हर ज़माने में पाप की सजा उसकी दशा के अनुसार होती है। मैं इसका समर्थन करता हूँ।

8. चिराग जलाना सूरज की शान प्रकट करना है। सूरज डूबने के बाद चिराग न जलाया जाए तो क्या किया जाए।

9. पेट को जानवरों का कब्रिस्तान बनाना उचित नहीं।

10. कसाई, मछली के शिकारी, और हत्या करने वाले लोग न मिलें और जो मिलता हो उससे अर्थ–दण्ड लिया जाए।

11. अजनबी लोगों में विवाह करना अच्छा है।

12. शासक का दर्शन खुदा की इबादत है इसीलिए वह जिल्लुल्लाह अर्थात अल्लाह की छाया कहलाता है। छाया देने वाले को छाया बताता है। इसलिए शासक का दर्शन खुदा की याद की पूँजी है।

ऊपर अबुल फजल ने जो कुछ लिखा है उससे स्पष्ट होता है कि अकबर इस्लाम का पालन करना मात्र अंधविश्वास समझता, इस अंधविश्वास की उसने निन्दा की और बुद्धि को उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया। तर्क के चिराग से अपने मन को यह कहकर रोशन किया कि तर्क के माध्यम से ही किसी बात को मानना न्याय है। इसी से दिल के ताले की कुँजी खुल सकती है। इसी बुद्धि को प्रयोग करके वह पवित्र आत्मा की बातें अपने मुँह से बोलने लगा और उसके विलायत का प्रकाश अपनी छाया दिखाने लगा। उसकी आत्मा का जादू और शोर उठा तो देखने वाली आँखें रखने वालों ने उसको आत्माओं की दुनिया का पेशवा मान लिया।

❖❖❖

कुरआन की तिलावत के चार फ़ायदे

- कुरआन मजीद की तिलावत से अल्लाह की मुहब्बत में बढ़ोत्तरी होती है।
- हर हर शब्द पर दस नेकियाँ मिलती हैं।
- दिल का ज़ंग साफ़ होता है।
- क़यामत के दिन कुरआन गवाही देगा।

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दुनिया की मुहब्बतः-

इस वक्त जो मर्ज उम्मत को घुन की तरह लग गया है और इसको चाटता चला जा रहा है, वो दुनिया की मुहब्बत है, ये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक भविष्यवाणी है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया थाः

अनुवादः— "मुझे तुम पर गरीबी की आशंका नहीं है, मुझे आशंका इस बात का है कि दुनिया तुम्हारे लिए खोल दी जाएगी, जैसे पिछली उम्मतों पर खोल दी गई, और जिस तरह उसने उनको बर्बाद किया वो तुमको भी बर्बाद कर देगी''।

(अल–बुखारीः 3158)

ये आशंका एक हकीकत बन कर सामने आ रही है, क्या खास क्या आम, क्या पढ़ा–लिखा और क्या जाहिल, हर शख्स इसकी मुहब्बत के जाल में फंसा हुआ है, और इसके लिए हर तरह के उपाय किये जा रहे हैं, फिर कोई नहीं देखता कि इसके नतीजे क्या होंगे, और इसके लिए क्या क्या पापड़ बेलने पड़ेंगे, हद ये है कि दीनदार वर्ग भी आम तौर पर अलग अलग बहानों से इसका शिकार हो जाता है, और फिर धीरे धीरे दीन की हकीकत दिलों से निकल जाती है।

ये मर्ज ऐसा है कि हर गुनाह की जड़ है, कहा जाता हैः–

अनुवादः— "दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की बुनियाद है।"

(जामेउल उसूलः 2603)

फिर आदमी हक मारता है, रिश्वत लेता है, नाप तौल में कमी करता है, झूठ बोलता है, धोखा देता है और न जाने क्या क्या करता है, और सिर्फ दुनिया के चंद टकों की खातिर वो अपना ईमान बेचने को तैयार हो जाता है, इरशाद–ए–नबवी हैः

अनुवादः— "आमाल में जल्दी करो, फितने आने वाले हैं, काली रात की टुकड़ियों की तरह, एक वक्त आने वाला है की आदमी सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफिर हो जाएगा, शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफिर हो जाएगा, वो दुनिया के चंद टकों की खातिर अपना ईमान बेच देगा।"

(मुस्लिम शरीफः 328)

दुनिया की मुहब्बत आँखों को चौंधिया देगी और वो ये भूल जाएगा कि अल्लाह के यहाँ ये किस कद्र बे कीमत है, हदीस में इरशाद है कि दुनिया अगर अल्लाह के नजदीक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वो अपने इनकार करने वालों को एक घूँट पानी भी न देता, और कुरआन मजीद में एक आयत ऐसी है कि आदमी पढ़े तो उसकी आँखें खुल जाएं. अल्लाह के नजदीक दुनिया की हकीकत क्या है?:

अनुवादः— "और अगर ये (ख्याल) न होता कि तमाम लोग एक ही मिल्लत (कुफ्र) पर आ जाएंगे तो हम ज़रूर रहमान का इनकार करने वालों के लिए उनके घरों की छतों को चांदी का कर देते और जीने भी जिन पर वो चढ़ा करते हैं, और उनके घरों के दरवाजे और मसेहरियां जिन पर वो टेक लगते हैं, सोने का कर देते, जब कि ये सब कुछ बस दुनिया की ज़िन्दगी के सामान हैं, और आपके के नज़दीक आखिरत परहेजगारों के लिए है।"

(अल–जुखरुफः 33–35)

दुनिया की कीमत है तो इसलिए कि ये आखिरत की खेती है, वहां की तैयारी का प्लेटफॉर्म है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की पूरी ज़िन्दगी गरीबी में गुजरी, हजरत आयशा फरमाती हैं कि हम तीन तीन चाँद देख लेते थे और हमारे घरों में चूल्हा नहीं जलता था।

(सहीह मुस्लिमः 7639)

जब कि ये दौर मदीना मुनव्वरह का है, फतह का जमाना था, मगर हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये कब गवारा था कि कुछ रह जाए, एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के बाद सलाम फेरते ही तेजी से घर तशरीफ ले गए, वापस तशरीफ लाये तो फरमाया कि मुझे याद आया कि मेरे घर में सोने का टुकड़ा रखा है, मुझे ये अच्छा न लगा कि वो मेरे घर में रहे और सदका न दिया जाए।

(अल–बुखारीः 851)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी औलाद के लिए भी गरीबी ही को पसंद फरमाया, और दुआ की–

अनुवादः– "ऐ अल्लाह मुहम्मद की औलाद को बकद्र–ए–ज़रुरत रोजी अता फरमा।"

(सहीह मुस्लिमः 2474)

और एक सहाबी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि अल्लाह के रसूल आपसे मुझे मुहब्बत है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

अनुवादः– "ऐसा है तो गरीबी के लिए ढाल तैयार कर लो।"

(तिरमिजी शरीफः 2574)

उम्मत की तबाही के कारणों में से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया की मुहब्बत का जिक्र फरमाया है, एक हदीस में फरमायाः

एक वक्त आएगा कि कौमें तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी जैसे प्याले पर भूके टूटे पड़ते हैं, हमने अर्ज किया कि अल्लाह के रसूल! क्या हमारी तादाद बहुत कम हो जाएगी? आपने फरमायाः नहीं, तुम्हारी तादाद बहुत होगी, लेकिन बाढ़ की घास पात की तरह, और अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन के दिलों से रोब ख़त्म कर देगा, और तुम्हारे दिलों में कायरता डाल देगा, वो कायरता दुनिया की मुहब्बत और मौत से ना पसंदीदगी जाहिर करना होगी।

(अबू दाऊदः 4299)

ये हदीस पूरी तरह आज हमारे हालात पर सही साबित होती है, दुनिया में मुसलमानों की तादाद इतनी है जो कभी नहीं रही, मगर दुनिया की कौमें मुसलमानों पर टूटी पड़ रही हैं, ये सिर्फ दुनिया की मुहब्बत का नतीजा है।

माल को कुरआन मजीद में बुरा नहीं कहा गया, इसको खैर कहा गया, मगर जब ही कि वो अपनी जगह इस्तेमाल हो, किसी अल्लाह वाले "आरिफ" ने कहा कि माल की जगह दिल नहीं है, जब भी वो दिल में आएगा तो उस में बदबू पैदा होगी और हालात बिड़ेंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि इस वक्त समाज के बिगाड़ में बड़ा हाथ इसी मर्ज का है, इसी के नतीजे में आदमी हक मारता है, विरासत में हक मारता है, संयुक्त व्यापार में दूसरे का हक अदा नहीं करता, चोरी करता है, इससे दिलों में द्राड़ें पड़ती हैं और लड़ाई झगडे की बुनियाद पड़ जाती है।

ये ऐसा मर्ज है कि अगर इलाज न किया जाए तो बढ़ता जाता है, इंसान ऐसा लालची और कंजूस बन जाता है कि फिर ये कहावत उस पर सही साबित होती है कि "चमड़ी जाए दम्ड़ी न जाए", हदीस में इसकी मिसाल पेश की गई हैः

अनुवादः– "कंजूस व उदार की मिसाल उन दो आदमियों की तरह है जिस पर लोहे की कवच हों, गले से सीने तक, जहां तक खर्च करने वाले उदार का सम्बन्ध है तो जब वो खर्च करता है, वो उसके शरीर पर ढीली होती है, यहाँ तक कि उसकी उँगलियाँ छुप जाती हैं और उसके पैरों के निशाँ मिटने

शेष पृष्ठ ....27..पर

शादी से अलग होने के लिए औरत का अधिकार

मुनव्वर सुल्तान नदवी

अक्सर यह कहा जाता है कि इस्लाम में तलाक़ का अधिकार सिर्फ़ मर्द को है, औरत को अधिकार नहीं है। मर्द जब चाहे औरत को तलाक दे सकता है। इसके उलट औरत मजबूर होती है, वह अपने पति की कृपा पर निर्भर रहती है। यह धारणा जहाँ आम देशवासियों में पाई जाती है, वहीं बहुत से मुसलमानों के दिमाग में भी यही बात होती है। यह एतिराज बहुत पुराना है और इसकी गूँज अक्सर सुनाई देती रहती है। कुछ मुस्लिम बुद्धिजीवियों की रचनाओं में भी यह दर्द झलकता है। ''मुस्लिम औरत की मजबूरी और बेबसी'' के नाम पर असल निशाना इस्लाम पर लगाया जाता है कि इस्लाम ने मर्द और औरत में भेदभाव किया है, मर्द को ज़्यादा अधिकार दिए हैं और औरत को कम। इसे सरासर नाइंसाफी और औरत पर जुल्म बताया जाता है।

हक़ीक़त यह है कि इस्लाम में औरत को जितने अधिकार मिले हैं, उतने किसी अन्य धर्म या किसी सभ्य समाज में नहीं मिले। औरतों के अधिकारों के तथाकथित समर्थक और ''महिला स्वतंत्रता'' के रखवालों ने औरत की इज़्ज़त का सबक़ खुद इस्लाम से सीखा है। फिर यह कैसे संभव है कि वही धर्म जो औरतों को अधिकार देने में सबसे आगे हो, उसी धर्म में औरत के साथ इतनी बड़ी नाइंसाफी हो जाए? इस मामले में जहाँ दूसरों की चालाकी शामिल है, वहीं इस्लामी शिक्षाओं से अनजान होना और इस्लाम की अधूरी जानकारी भी एक कारण है।

निकाह/विवाह की अवधारणा हर धर्म में मौजूद है। धर्मों में आमतौर पर निकाह को एक पवित्र कार्य, एक अनुबंध (समझौता) और सामाजिक रस्म माना गया है। इस्लाम ने निकाह को एक पूरा और व्यवस्थित रूप दिया, जो इबादत (उपासना), अनुबंध और अधिकारों पर आधारित है। निकाह का पूरा ढांचा औरत की इज़्ज़त, उसके अधिकारों की हिफाजत और औरत के प्रति मर्द की जवाबदेही पर आधारित है। इस्लाम में जिस तरह मर्द और औरत दोनों के अधिकार और कर्तव्य साफ तौर पर तय किए गए हैं, और जिस तरह बच्चों की परवरिश, घर की जिम्मेदारी और परिवार के पालन–पोषण का बोझ मर्द के कंधों पर रखा गया है, उसकी मिसाल किसी और धर्म में नहीं मिलती।

इस्लाम ने ही औरत को यह सम्मान दिया कि निकाह के लिए उसकी रजामंदी ज़रूरी है। औरत की मंजूरी के बिना निकाह नहीं हो सकता। बालिग़ लड़की को अपनी पसंद के मुताबिक निकाह करने का अधिकार है। औरत की आज़ादी की इससे बड़ी मिसाल और क्या होगी? इस्लाम में निकाह इबादत भी है और अनुबंध भी। इबादत का मतलब यह है कि निकाह केवल सामाजिक ज़रूरत पूरी करने का साधन नहीं, बल्कि दुनिया और आख़रित (परलोक) में सफलता का भी जरिया है। इसीलिए हदीसों में निकाह को ''ईमान का आधा हिस्सा पूरा करना'' कहा गया है।

निकाह का अनुबंध होना यह दिखाता है कि इस अनुबंध की पाबंदी करना ज़रूरी है, लेकिन यह अनुबंध अटूट नहीं है

कि कभी ख़त्म ही न हो सके, न ही यह ''सात जन्मों का साथ'' है। निकाह से सिर्फ दो लोगों का रिश्ता नहीं बनता, बल्कि एक परिवार अस्तित्व में आता है। पवित्र कुरआन में पति–पत्नी को एक–दूसरे के लिए सुकून का साधन बताया गया है:

''और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ, और उसने तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत रख दी।''

(कुरआनः30/21)

इसीलिए निकाह का काम सोच–समझकर और पूरी गंभीरता से होना चाहिए। रिश्ता जुड़ने के बाद पूरी कोशिश होनी चाहिए कि यह रिश्ता पक्का और स्थायी हो। इस्लाम में तय समय के लिए निकाह (मतलब अस्थायी निकाह) को मना किया गया है।

लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है कि पति–पत्नी के बीच वैसा मेलजोल और समझ नहीं बन पाती जैसी होनी चाहिए, जिससे यह रिश्ता निभाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में इस्लाम में साफ निर्देश मौजूद हैं।

पवित्र कुरआन में पति–पत्नी के बीच झगड़ों को सुलझाने के लिए चार तरीके बताए गए हैं:– पहला, प्यार और नरमी से समझाना। दूसरा, बिस्तर अलग करना। तीसरा, हल्की डॉट–फटकार और चौथा परिवार के समझदार लोगों के जरिए सुलह कराना। इन उपायों को अपनाने से बहुत से झगड़े आसानी से खत्म हो जाएंगे।

इन कोशिशों के बाद भी हालात ठीक न हों और यह साफ हो जाए कि दोनों के स्वभाव इतने अलग हैं कि साथ रहना मुमकिन नहीं है तो ऐसी स्थिति में अलग होने के तरीक़ों पर विचार करना चाहिए।

कुरआन का साफ आदेश है कि अगर पति–पत्नी साथ रहना चाहते हैं तो अच्छे ढंग से जीवन बिताएँ और अगर ऐसा संभव न हो तो अच्छे और सम्मानजनक तरीके से अलग हो जाएँ:

''या तो भले तरीक़े से साथ रहो या अच्छे ढंग से अलग हो जाओ।''

(कुरआनः 2/229)

घुट–घुटकर मरने, घर को तबाह करने और बच्चों के भविष्य को बर्बाद करने से बेहतर है कि इस रिश्ते को ख़त्म करके दोनों अपनी–अपनी अलग जिंदगी गुजारें।

निकाह ख़त्म करने के कई तरीके हैं– जैसे तलाक़, खुलाअ, मुबारात, फसख और तफरीक़ आदि। तलाक़ का अधिकार मर्द को दिया गया है। इसके दो मुख्य कारण हैं– पहला, मर्द घर का जिम्मेदार और प्रभारी होता है दूसरा, मर्द की तुलना में औरत ज़्यादा भावुक होती है। प्रकृति ने औरत को बच्चे की परवरिश और घर संभालने की जिम्मेदारी दी है, इसलिए उसमें भावनाएँ मर्द के मुक़ाबले ज़्यादा होती हैं। इसी तरह औरत जल्दी प्रभावित भी होती है। इस दृष्टि से तलाक़ का अधिकार मर्द को दिया गया ताकि वह सोच–समझकर इसका इस्तेमाल करे।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि मर्द को मनमानी की पूरी आजादी है कि जब चाहे तलाक़ दे दे।

अलग होने से पहले कुरआन की हिदायतों के मुताबिक पहले बताई गई चारों कोशिशें की जाएं। अगर इसके बाद भी सुधार न हो, तब अलग होने का फैसला किया जा सकता है। अगर मर्द इस्लामी हिदायतों को नज़रअंदाज करके तलाक़ देता है तो यह गुनाह होगा,

क्योंकि हलाल चीजों में सबसे नापसंदीदा चीज़ तलाक़ है।

पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमायाः

''अल्लाह के नजदीक हलाल चीजों में सबसे नापसंदीदा चीज़ तलाक़ है।'' (हदीस सुनन अबू दाऊद, किताब अल–तलाक़, हदीसः 2180)

शरीअत में तलाक़ के तरीके बताए गए हैं, उसी के मुताबिक़ तलाक़ देना चाहिए ताकि तलाक़ के बाद सोच–विचार और दोबारा साथ रहने की गुंजाइश बाक़ी रहे।

अगर औरत को पति के साथ रहना मुश्किल लगे, जैसे पति जुल्म करता है, उसके अधिकार न निभाता हो, या किसी गंभीर बीमारी में है, ऐसी स्थिति में औरत भी अलग होने का रास्ता चुन सकती है। अलगाव के इस रूप को ''खुलाअ'' कहा जाता है। कुरआन में खुलाअ का जिक्र मौजूद हैः–

''अगर तुम्हें डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर क़ायम न रहेंगे तो औरत जो कुछ देकर छुटकारा हासिल करना चाहे उसमें उन दोनों के लिए कोई गुनाह नहीं।''

(कुरआन, 2:229)

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) के दौर में कई सहाबियात ने अपने पतियों से खुलाअ लिया था, जैसे रबीअ बिन्ते मुअव्वज़ बिन अफरा और साबित बिन कैस की बीवी हबीबा बिन्ते सहल का मामला हदीस की किताबों में दर्ज है।

खुलाअ निकाह से अलग होने के लिए औरत के पास शरीअत का दिया हुआ एक अधिकार है, लेकिन जैसे मर्द के लिए बिना वजह तलाक़ देना गुनाह है, वैसे ही औरत के लिए बिना वजह खुलाअ माँगना भी गुनाह है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमायाः जो औरत बिना किसी कारण अपने पति से तलाक़ माँगे उस पर जन्नत की ख़ुशबू हराम है।''

(हदीस सुनन तिर्मिज़ीः 1225)

औरत खुलाअ के जरिए अपने पति से रिश्ता ख़त्म कर सकती है। अगर औरत खुलाअ लेना चाहे तो पति के लिए उसे देना अनिवार्य है या नहीं, इस बारे में फुकहा (विद्वानों) में मतभेद है। हदीसों से मालूम होता है कि – जिन सहाबियात ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के पास अपने पतियों की शिकायत की, आपने उनके मामले सुलझाए, कभी खुलाअ से, कभी तलाक़ से। और यही – बात बुद्धिसंगत भी है, क्योंकि अगर कोई औरत साथ रहना नहीं चाहती तो उसे मजबूर नहीं किया जा सकता।

खुलाअ नहीं मिलेगा तो मुमकिन है कि औरत अलगाव के लिए कोई दूसरा तरीक़ा अपनाने के लिए मजबूर हो। खुलाअ की स्थिति में औरत अपने पति से अलग होने की दरख्वास्त करती है और बदले में महर, इद्दत का ख़र्च या कोई और तयशुदा रक़म वापस करती है। इस तरह आपसी समझौते से दोनों के बीच अलगाव हो जाता है।

मुस्लिम समाज में आमतौर पर खुलाअ को बहुत मुश्किल समझा जाता है, हालांकि यह एक आसान प्रक्रिया है। इसके लिए अदालत या दारुल–कजा जाना ज़रूरी नहीं। बस एक लिखित समझौता होना चाहिए, जिसमें लिखा जाए कि औरत की दरख्वास्त पर पति उसे तलाक दे रहा है। इस पर पति–पत्नी और दो गवाहों के दस्तख़त हो जाएँ तो उसी वक्त से दोनों के बीच अलगाव हो जाएगा। अगर कोई झगड़ा हो, जैसे दहेज के सामान की वापसी या बच्चों की परवरिश का मामला तो इन्हें भी खुलअ़ के समझौते में तय कर लेना चाहिए ताकि बाद में कोई विवाद बाकी न रहे।

निकाह का असल मकसद आपसी सुकून है। अगर किसी वजह से यह सुकून न मिले, जिंदगी कड़वी बन जाए, निभाना मुश्किल हो जाए, तो समझदारी यही है कि रिश्ता खत्म कर दिया जाए। न पति को जुल्म की इजाजत है, न औरत को घुट–घुटकर मरने के लिए छोड़ दिया जाएगा। घर के बड़े और समझदार लोगों की जिम्मेदारी है कि अगर पति–पत्नी में झगड़ा बढ़ जाए तो उन्हें नरमी से समझाएँ, सुलह कराएँ, और अगर अलग होना बेहतर लगे तो शरीअत के मुताबिक अलगाव का रास्ता अपनाएँ।

हमारे समाज की बड़ी विडंबना यह भी है कि जब बहन या बेटी की शादी होती है तो बड़े धूमधाम से करते है, अपनी इच्छाएँ और अरमान पूरे करते हैं, लेकिन जब उसी बेटी या बहन को शादी में परेशानी आने लगती है या उसका रिश्ता नहीं निभ पाता, तो ऐसे मौके पर उनकी मदद के लिए खड़े नहीं होते, उनका साथ नहीं देते। दुर्भाग्य से अगर ऐसी औरत अलग होकर मायके लौट आए तो उसे तिरस्कार से देखा जाता है और कई बार उसे अपनाने में भी हिचक महसूस की जाती है। जबकि पिता–बेटी या भाई–बहन का रिश्ता हमेशा बाकी रहता है।

शादी के बाद बहन पराई नहीं हो जाती बल्कि ऐसी औरत और ज्यादा सहानुभूति की हकदार होती है। इस मामले में मर्दों के मुकाबले औरतें ज्यादा तंग नज़र साबित हुई हैं। शरीअत का साफ नियम है कि जैसे शादी से पहले लड़की की जिम्मेदारी बाप पर होती है, वैसे ही शादी के बाद भी अगर अलगाव हो जाए तो उसकी जिम्मेदारी फिर से बाप पर होगी। यही बात भाई और चाचा पर भी लागू होती है।

निकाह खत्म होने की सूरत में अगर औरत की संतान कमाने लायक है तो उसकी ज़िम्मेदारी उन्हीं पर लागू होगी। बच्चों के छोटे होने या न होने की सूरत में ज़िम्मेदारी पिता पर है। अगर पिता के पास सामर्थ नहीं है तो भाई पर और उसके बाद चाचा पर औरत की देखभाल अनिवार्य है। यह शरीअत की ज़िम्मेदारी है और इसमें कोताही बरतने पर आखिरत (परलोक) में जवाबदेही होगी।

मौजूदा दौर में औरतों में खुलाअ लेने का चलन तेजी से बढ़ रहा है। यह समाज के लिए अच्छा नहीं है। निकाह से पहले अच्छे से सोच लेना चाहिए, लेकिन जब एक बार रिश्ता हो जाए तो उसे निभाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। घरेलू समस्याओं से भागना समस्याओं का समाधान नहीं है। मतभेद के कारणों को समझें, अपने अधिकारों से पहले अपने कर्तव्यों पर ध्यान दें, दूसरे के अधिकारों का भी खयाल रखें। संयुक्त परिवार में सहनशीलता बहुत ज़रूरी है। इसी तरह उदारता और समझदारी की हर क़दम पर ज़रूरत पड़ती रहती है। अगर इन बातों पर अमल किया जाए, तो वैवाहिक जीवन बेहतर बनाया जा सकता है।

घर को शांतिपूर्ण बनाना मर्द और औरत दोनों की ज़िम्मेदारी है। ज़रूरत पड़ने पर दोनों को कुर्बानी देनी चाहिए। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जहाँ औरत के लिए पति की खुशी को जन्नत में दाखिले का कारण बताया, वहीं आपका फरमान है कि मर्द के अच्छे आचरण की पहचान यह है कि वह अपनी बीवी के साथ कैसा व्यवहार करता है।

(साभार मासिक पत्रिका "कान्ति")

❖❖❖

इस्लाम और उसकी मानवतावादी शिक्षा की समाज को ज़रूरत

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

"इस्लाम" जीवन में अल्लाह के आज्ञा पालन का नाम है और वह मात्र किसी विशेष समय की इबादत तक सीमित नहीं है बल्कि वह जीवन जीने के हर ढंग को सिखाता है, यहां तक वह व्यक्ति के निजी जीवन से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तक सारे नियम और तरीके को बताता है। इस्लाम की अपनी नैतिक व्यवस्था, आध्यात्मिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था और आर्थिक व्यवस्था पूरे विस्तार के साथ मौजूद है। जीवन की सारी समस्याओं पर इस्लाम अपना एक स्पष्ट दृष्टिकोण रखता है।

अब जैसे मानवता को ही लीजिए कि रंग,जाति, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र, देशों और राष्ट्रों में बँटी इस दुनिया में मानवता के प्रति इस्लाम एक आदर्श दृष्टिकोण रखता है। इस्लाम इंसानों के सामने विश्व–बन्धुत्व का विचार पेश करता है। इंसानों को याद दिलाता है कि मानवता की शुरुआत एक पुरुष और एक स्त्री से हुई है। आज दुनिया में जितने भी इंसान पाये जाते है, वह सब एक ही माँ–बाप की संतान हैं। इन सब का बनाने वाला एक ही है और सभी एक ही तत्व से बने हैं। अतः ऊँच–नीच और छुआछूत बेमानी है और इस्लाम में इसकी कोई जगह नहीं। पवित्र कुरआन में हैः "ऐ लोगों हमने तुम्हें पैदा किया है एक पुरुष और एक महिला से, निस्संदेह तुम में सबसे अधिक इज़्ज़त वाला वह है जो रब से सबसे ज़्यादा डरने वाला है।

आगे ऊंच–नीच और जात–पात पर प्रहार करते हुए हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहते हैं :–

"किसी अरब को किसी गैर अरब पर और किसी गैर अरब को किसी अरब पर और किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरो पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है, मगर तक़्वा (ईश भय) में।"

इस्लाम की दृष्टि में धरती पर रहने वाले सारे इंसान बराबर हैं। रंग, नस्ल, भाषा और क्षेत्र के आधार पर किसी को किसी पर कोई श्रेष्ठता नहीं। इस्लाम सारे इंसानों को एक सूत्र में बांधता और इंसान के अंदर की इन्सानियत को जगाता है।

ज़रूरी मालूम होता है कि जिस तरह मानवतावादी इस्लामी शिक्षा ने विश्व का मार्गदर्शन किया है तो मानवता वादी शिक्षा की ज़रूरत पर भी एक नज़र डाल ली जाए।

माना जाता है कि समाज सुधार और नैतिक उत्थान के लिए मानवतावादी शिक्षा अनिवार्य है, जो आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति, और सामाजिक उत्तरदायित्व दृष्टिकोण विकसित करती है। यह शिक्षा कुरीतियों, अंधविश्वास और भेदभाव को दूर कर एक न्यायपूर्ण, सौहार्दपूर्ण और प्रगतिशील समाज का निर्माण करती है। यह शिक्षा छात्र–छात्राओं में नैतिकता, करुणा और सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों को विकसित करती है। इसी तरह यह व्यक्ति को रूढ़िवादी परम्पराओं और अंधविश्वासों पर प्रश्न उठाने और तर्कसंगत निर्णय लेने में सक्षम बनाती है तो वहीं भेदभाव और असमानता को कम करके,

यह एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की ओर अग्रसर करती है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे वे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। यह समाज के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को विस्तृत करती है, जिससे वे नई और प्रगतिशील सोच को स्वीकार करने के लिए तैयार होते हैं।

शिक्षा मनुष्य के अंदर अच्छे विचारों को उभारती है और अंदर के बुरे विचारों को निकाल बाहर करती है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। इससे मनुष्य के अंदर मनुष्यता आती है। इसके माध्यम से मानव समुदाय में अच्छे संस्कार की आदत डालने में पर्याप्त मदद मिलती है।

बड़े–बुजुर्ग कहते हैं कि शिक्षा मनुष्य को जानवर से ऊपर उठाने वाली प्रक्रिया है। पशु अज्ञानी होता है उसे सही या गलत का बहुत कम ज्ञान होता है। अशिक्षित मनुष्य भी जानवरों जैसा ही होता है। वह सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं होता है। लेकिन जब वह शिक्षा प्राप्त कर लेता है तो वह इंसानों की श्रेणी में आ जाता है। तब वह प्रत्येक कार्य सोच–समझकर करता है। उसके अंदर जितने प्रकार की उलझनें होती हैं,उन्हें वह दूर कर पाने में समर्थ होता है। शिक्षा का मूल अर्थ और उद्देश्य यही है कि वह व्यक्ति का उचित मार्गदर्शन और रहनुमाई करे। अगर सीधे शब्दों में कहा जाय तो जिस शिक्षा से व्यक्ति का सही मार्गदर्शन नहीं होता, वह शिक्षा नहीं बल्कि अशिक्षा और अज्ञानता है।

शिक्षा में सामाजिकता का आना स्वाभाविक है क्योंकि हम सबका मानना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यदि उसे समाज से अलग कर दिया जाये तो उसका जिंदा रहना मुश्किल हो जायेगा। सभी बच्चे समाज में ही जन्म लेते हैं तथा समाज में ही उसका पालन– पोषण होता है। समाज में ही रहते हुए वह बोलना–चलना, पढना–लिखना तथा दूसरों से व्यवहार और आदत सीखते हैं। समाज में ही रहते हुए उसकी विभिन्न जरूरतें पूरी होती हैं तथा विभिन्न विचारों के आदान– प्रदान के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का विकास होता है समाज की उन्नति से वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करता है तथा समाज की हानि से उसे भी क्षति पहुँचती है अर्थात समाज की हर गतिविधि का वह प्रभाव ग्रहण करता है।

बहरहाल बात शिक्षा की हो रही थी कि वर्तमान में शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं परंतु उसे नई दिशा देने की जरूरत है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि व्यक्ति अपने परिवेश और समाज को जान सके. शिक्षा में ऐसी बातों को जोड़ना चाहिए जिससे मनुष्य का आत्मिक विकास हो सके। वर्तमान में शिक्षा आदमी को धन कमाने की मशीन बना रही है जिससे आदमी आत्म–केंद्रित और स्वार्थी बनकर रह गया है। जिसके कारण वह बेईमानी, भ्रष्टाचार और दिखावे में उलझ गया है। वर्तमान शिक्षा के गलत उद्देश्य से मनुष्य की आत्मा मरती चली जा रही है। हालांकि शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए इसे और अधिक व्यापक और मजबूत तथा आदर्शवादी बनाने की आवश्यकता थी। इसलिए शिक्षा को जन–जन तक फैलाने की जरूरत है। हमें प्रण लेना होगा कि वर्तमान सदी में भारत का हर नागरिक शिक्षित हो, सभ्य हो, मानवता वादी और सबसे बड़ी बात कि वह देश और समाज के प्रति समर्पित हो।

❖❖❖

समय मूल्यवान है इसे नष्ट न करें

हमीदुल्लाह

कुछ दिनों पहले मैं अपने गांव गया। वहां शीशम की घनी छावं तले गांव के कई नवजवान टोलियों में ताश या लूडो खेलते हुए नज़र आये। गांव के छोटे से बाज़ार में भी तकरीबन हर उम्र के लोग खुशगप्पियों में लगे थे। यह छोटे से देहात का किस्सा है। हमारे देश की 70 प्रतिशत आबादी देहाती है। और अधिकांश देहातियों की ज़िन्दगी इसी डगर पर गुज़र रही है।

शहरों की हालत भी कुछ ऐसी ही है यहां भी चायखाने और कलब दिन रात आबाद रहते हैं। बागाता और बाज़ारों में बेमकसद घूमने फिरने दिन–रात सुबह शाम जहाँ चाहें वक़्त गुज़ारने और दर बदर भटकने वाले लोगों की कोई कमी नहीं। इन्टरनेट, कैफे, और वीडियो खेलों में व्यस्त नवजवान साफ कहते हैं, ''हमारा मकसद समय काटना है'' यह तो उन लोगों की कहानी है जिन्हें कोई काम नहीं मिल रहा है और जिन्हें बेरोजगार कहा जाता है। तस्वीर का एक रुख और भी है सरकारी दफ़्तरों और संस्थाओं में काम करने वाले मातहतों और अफसरों की ''व्यस्तता'' का दृश्य है। जहां आठ बजे दफ़्तर खुलने चाहिए वहां दस बजे से पहले न डाक्टर मौजूद होता है न पटवारी, तहसीलदार और न किसी विभाग का जिम्मेदार, सुब्ह का समय दोस्तों के साथ गपशप, चाय पीने और मोबाइल पर सम्पर्क करने की नज़र हो जाता है।

अब वह नौकरी बेहतरीन समझी जाती है। जिसमें काम कम करना पड़े और तनख्वाह अच्छी हो, तेज गाड़ी, निवास तथा अन्य सुविधायें खूब मिलें। वैसे भी हमारे यहां वेतन इस हिसाब से दिया जाता है कि जिसका काम जितना अधिक होगा उसकी तनख्वाह उतनी ही कम और सुविधायें न होने के बराबर। जहां तक राजनीतिज्ञों की बात है निजी या सरकारी आयोजनों में निश्चित समय पर पहुंचना मुख्य अतिथि के लिये तौहीन समझा जाता है। यही कारण है कि देश में कोई प्रोग्राम, आयोजन और कोई काम न समय पर शुरू होता है न समय पर समाप्त होता है। हम बहैसियत नेशन समय की मूल्यवान पूंजी को जिस बेपरवाही और बेदर्दी से नष्ट करते हैं वह अपनी मिसाल आप हैं। मेरे नज़दीक़ तो हमारी दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण यही है।

सच तो यह है कि समय जीवन है वह हर चीज़ को निगल कर विलुप्त कर देता है जो जीवित रहने योग्य न हो। इसके विपरीत जो समय से भरपूर फायदा उठाये वह कामयाब हो जाता है।

इतिहास के अध्ययन से यह बात सामने आती है कि न केवल महापुरूषों बल्कि नेशन्स की कामयाबी का सबसे बड़ा भेद समय की कद्रदानी और प्लानिंग में निहित है। एक विद्वान डॉ0 मुहम्मद यहिया लिखते हैं मैं ने किसी व्यक्ति को कामयाब होते नहीं देखा जो समय नष्ट करता है।

हज़रत उमर का कथन है कि जब मुझे किसी के बारे में

बताया जाता है कि वह कोई काम नहीं करता तो वह मेरी निगाहों से गिर जाता है।

स्वयं हमारे नबी सल्ल० और सहाबः की जिन्दगियां समय के बेहतरीन संयोजन की आला नमूना हैं। मुसलमान मक्का वालों की यातनायें और आजमाइशें झेलने के बाद बेसरोसामानी के आलम में मदीना पहुंचे। वहां फिर वह अपनी नई हुकूमत बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने दिलों को मांझने और शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था की और आर्थिक विकास और रक्षात्मक क्षमताओं की प्राप्ति के लिये व्यवहारिक उपाय किये। शैतानी शक्तियों का हर मैदान में मुकाबला किया। यूं एक साल की संक्षिप्त अवधि में उन्होंने अरब से आज्ञानता (जाहिलियत) का खात्मा करके इस्लाम का झंडा लहराया और उस समय की सुपर शक्तियों को पराजित किया। थोड़े से मुसलमानों ने समय का सही इस्तेमाल कर के और स्वपनों का संसार सजा कर एक संक्षिप्त अवधि में इतने बड़े कारनामे अंजाम दिये। वास्तव में उन्होंने अपने अमल का लमहों में हिसाब करके हर पल को अपना एक स्थान दिया और रहमान के इस फरमान को अपना लक्ष्य बना लिया, "आसमानों और ज़मीन की रचना में और दिन–रात के आने जाने में अकलमन्दों के लिये निशानियां है।

(कुरआन)

जब तक मुसलमान वक्त की कद्र करते रहे वह दुनिया के सुपर पावर रहे। फिर समय ने भी मुसलमानों की गोद में बू अली सीना, अल्फाराबी, अल्बैरूनी, और इब्ने तैमियाः जैसे मोती डाले। इक़बाल ने इन्हीं के बारे में कहा हैः

"निशाने राह दिखाते थे जो सितारों को,

इसके विपरीत जब सामग्री पालिसियों ने मुसलमानों की जिन्दगी में तन आसानी और भौतिकवाद का अफयून दाखिल कर दिया तो दुनिया की रहनुमाई करने वाली "कौम की ज़िन्दगी का बड़ा मकसद, खाओ माल बढ़ाओ और ऐश करो" बन गया। और आज मुसलमान,

"तरस गये हैं किसी मर्दे राहदां के लिए"

इतिहास गवाह है कि जिन नेशन्स ने वक्त की कद्र की, कामयाबी ने उनके कदम चूमे। जापानियों की मिसाल हम सब के सामने है। द्वितीय विश्व युद्ध में वहां तबाही आई। इसके बावजूद जापानी चंद सालों की अल्प अवधि में लगातार मेहनत और समय के बेहतरीन उपयोग की बदौलत दुनिया में उच्च कोटि पर पहुंच गये। उनकी कामयाबी का राज यही है कि उन्होंने सदियों का सफर बरसों में तय किया।

आइये! संकल्प करें कि हम हर पल कोई लाभदायक कार्य करेंगे। आपके पास कोई काम नहीं तो कुरआन शरीफ की तिलावत कीजिए। किसी किताब का अध्ययन करें। कोई लाभदायक बात सुनें, किसी आर्थिक अथवा आन्दोलनात्मक क्रियाक्लाप में हिस्सा लें। और अपने आज को बीते कल से बेहतर बनाने का प्रयास करें।

"वर्तमान पल" को लाभदायक बनाने के लिए प्यारे नबी सल्ल0 का यह फरमान हमारे लिये मार्गदर्शन का काम करे कि अगर तुम्हारे हाथ में पौधा है और इस बीच प्रलय आ जाये, और तुम्हारे पास इतना समय है कि इसे लगा सकते हो, तो ज़रूर लगाओ, यह पौधा लगाने पर भी तुम्हें बदला मिलेगा।

❖❖❖

हंसी दुख का इलाज है

शमश आलम फतेहपुरी

मुस्कुराना हंसना या कहकहे लगाना ज़िन्दा दिली की निशानी है। वह लोग जिनके अन्दर हंसने की आदत होती है वह बहुतेरी अनजानी मुसीबतों आकस्मिक संकटों और सामयिक दुखों से बचे रहते हैं। ''मौलाना हाली'' ने ''यादगारे गालिब'' में गालिब को ''हैवाने जरीफ'' (प्रसन्न चित मनुष्य) कहा है गालिब को हैवाने जरीफ (प्रसन्न चित्त मनुष्य) कहने का कारण यह है कि वह हास्य के मनुष्य थे उन्होंने संकट की घड़ी में घुटने टेकना सीखा ही नहीं था। 1857 की कयामते सुगरा (महाक्रान्ति) के वह चश्मदीद गवाह थे उन्होंने अपनी आंखों से दिल्ली को तबाह व बरबाद होते हुए देखा था। उनके बहुत सारे मित्र इस संग्राम में भेट चढ़ गए थे ऐसी अवस्था में गालिब की जगह कोई दूसरा मनुष्य होता तो शायद ही वह इस प्रलयकारी अवस्था का सामना कर पाता गालिब ही वह जिन्दादिल इंसान थे जिन्होंने इस कठिन परिस्थिति में भी जीवित रहने का सामान जमा कर लिया।

तात्पर्य यह है कि मुस्कराने एवं हंसने के बहुत से लाभ हैं हंसने से मन बहलता है। चेहरे पर निखार आता है। डाक्टरों का कहना है कि हंसने से फेफड़े साफ होते हैं। फेफड़ों में ताजा हवा पहुंचती है जिसके कारण आदमी पहले के मुकाबिल ज्यादा अच्छी तरह सांस ले पाता है। वह लोग जो हमेशा हंसते रहते है वास्तव में उनके चेहरे पर हमेशा खुशी की लहर दौड़ती है वह इस फन से अपने आस पास मित्रों का एक बड़ा झुण्ड जमा कर लेते हैं। वह जहां भी होते हैं अपने इस फन के द्वारा महफिल के अन्दर एक निखार पैदा कर देते हैं और लोगों के अंदर एक उमंग और जोश पैदा कर देते हैं। अगर संयोग से उन पर कोई संकट आ जाए तो वह अच्छी तरह से उसका मुकाबला करते हैं। इस शेर के मिस्दाक हैं।

हजारों गम सहे लेकिन न आया आंख में आंसू
हम अहले जर्फ हैं पीते हैं छलकाया नहीं करते।

जो लोग यह सोच रखते हैं कि आफिस में काम के दौरान कतई हंसना या बोलना न चाहिए क्योंकि इस से काम में खलल पड़ता है। तो उन्हें ये सोच बदल देनी चाहिए। प्रसिद्ध विशेषज्ञ ''कर्सराबर्ट'' ने अपनी रिसर्च से यह प्रमाणित किया है कि आफिस में थोड़ा बहुत अवश्य हंसना बात करना चाहिए। कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में राबर्ट ने अपने अनुसंधान के द्वारा यह परिणाम निकाला है कि नौकरी से सम्बन्धित जगहों पर हंसी मजाक करते रहने से काम पर अच्छा प्रभाव पड़ता है ऐसी आदत प्राकृतिक के साथ साथ ताकत में भी बढ़ोत्तरी करती है और इससे कार्यक्षमता में भी बेहतरी आती है। राबर्ट का कहना है कि कोई भी आरगिनाइजेशन (संगठन) हो वहां हंसी मजाक का माहौल ज़रूरी है क्योंकि इससे माहौल खुशगवार रहता है और कर्मचारियों के बीच एक जोश पैदा होता है। कुछ देर की यह हंसी मजाक कर्मचारियों के तनाव को कम करने में सहायक होती है और उनके बीच आपसी मेल जोल पैदा करती है।

यद्यपि इस तरह का हंसना केवल हंसना हंसाना और

मजा लेना ही नहीं होता बल्कि हंसी मजाक के साथ–साथ संबंधों को ठीक करना भी इसका खास मकसद होता है। हसने और दूसरों को हंसाने से मन प्रसन्न होता है। लेकिन हंसी और मजाक के दौरान यह बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि हर इंसान जौक और आदत के एतबार से अलग होता है इसलिए हंसी और मजाक के समय एक दूसरे के मिजाज का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि कभी–कभी यह हंसी मजाक दिलों के अंदर भेदभाव पैदा कर देती है। इस लिए यह कतई मुनासिब नहीं कि आप दूसरे का दिल दुखायें या किसी का मजाक उड़ायें।

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि इस्लाम में उस हंसी मजाक से रोका गया है जो हद से बढ़ा हुआ हो और यह कि आदमी हमेशा हंसता ही रहे और कभी सन्जीदा व गम्भीर न हों इससे दिल कठोर हो जाता है और आदमी अल्लाह तआला की याद और दीन के अहम कामों से लापरवाह हो जाता है और अधिकतर इससे लोगों को तकलीफ पहुंचने लगती है और आपस में बैर व नफरत पैदा हो जाती है और उसका वकार समाप्त हो जाता है। लेकिन अगर यह सब चीजें न हों तो ऐसा हंसी मजाक करना जाइज होगा। जैसा कि आप (सल्ल0) लोगों के दिलों को जोड़ने और उनको अपने से निकट करने के लिए किया करते थे। यह सुन्नत और पसन्दीदा अमल है। इस बात को अच्छी तरीके से समझ लीजिए इसकी बहुत ज़रूरत पड़ती है।

अच्छा इंसान वही है जो अपनी गलती और दूसरों की अच्छाई पर नजर रखता है दुनिया में कोई ऐसा इंसान नहीं जिस से गलती न होती हो। इन्सान तो गलती का पुतला है। गलती किसी से भी हो सकती है। इसलिए किसी पर हंसने किसी का मजाक उड़ाने से पहले यह भी सोच लें कि आने वाले कल में कोई आप पर भी हंसेगा।

❖❖❖

पूज्य तू केवल रब को मान ध्यान पूर्वक पढ़ क़ुर्आन नबी मुहम्मद के पैरो को अपना प्रिय भाई मान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(इदारा)

पृष्ठ .....17... का शेष

लगते हैं, और जहां तक कंजूस का सम्बन्ध तो वो जब भी खर्च करने का इरादा करता है तो उसकी कड़ियाँ अपनी जगह पर और सख़्त हो जाती हैं, फिर वो उनको ढीला करना चाहता है मगर वो ढीली नहीं होतीं।"

(अल–बुखारीः 1443)

दुनिया की मुहब्बत ऐसी होती है कि आदमी को अँधा कर देती है, उसको सिर्फ पैसा नजर आता है, दूसरों के अधिकार उसको याद नहीं रहते, और फिर इसके नतीजे में नफ़्सी नफ़्सी का हाल पैदा हो जाता है।

दुनिया की मुहब्बत इंसान को हर चीज़ से गाफ़िल कर देती है, यहाँ तक कि आदमी फिर अपने आप को भुला देता है, उसको रुपयों–पैसों को गिन्ना और उसका हिसाब याद रह जाता है, उसको फिर अपना भी ख़याल नहीं रह जाता।

इसी मर्ज के नतीजे में लालच पैदा होती है, आदमी कंजूस हो जाता है, और फिर कभी ऐसी नौबत भी आती है कि वो चोरी डकैती पर तैयार हो जाता है, क़त्ल कर देना भी उसके लिए चंद टकों की खातिर आसान हो जाता है, सारांश ये कि ये मर्ज हजार बीमारियों की शुरुआत है।

❖❖❖

बीमार के हुक़ूक़

अल्लामा सैयद सुलेमान नदवी रह0

दुनिया का एक और कमजोर वर्ग जो हमारी हमदर्दी का मुस्तहिक (पात्र) है वह बीमारों और रोगियों का है। यह लोग सामान्य रूप से अपनी देख–रेख और अपने कार्य स्वयं नहीं कर सकते, उन हमदर्दी के लाइक इन्सानों की देख भाल, उनकी सेवा, उनके गम को बांटना और उनकी सहायता करना भी इन्सानियत का एक फर्ज है और उसी कर्तव्य का नाम अरबी में इयादत है।

इन बीमारों के साथ इस्लाम ने सबसे पहले हमदर्दी यह दिखाई कि वह बहुत से फराइज जिन के अदा करने से वह मजबूर व लाचार हैं, या जिनको करने से उनका रोग बढ़ सकता है उनको या तो बिल्कुल माफ कर दिया या कम कर दिया है और कुरआन ने इस के लिये एक कानून बना दिया।

''और न रोगी पर कोई तंगी है।'' (सूर नूरः 6)

''न अंधे पर तंगी है कि वह जिहाद में जाए और न लंगड़े पर और न बीमार पर।''

(अल्फत्हः 17)

''न कमज़ोरों पर और न बीमारों पर (जिहाद में न जाने की वजह से पूछ–ताछ होगी)

(सूरः तौबा 61)

बीमारों के लिए वुजू माफ है।

''या तुम बीमार हो तो तयम्मुम करो।''

(सूरः माइदा आयत नं 6)

इसी प्रकार उस से तहज्जुद की लम्बी नमाजें माफ हैं–

''अल्लाह को पता था कि तुम में कुछ बीमार भी होंगे।''

(सूरः मुजम्मिल आयत नं० 20)

इसी प्रकार हज के अहकाम व आदेश में भी रोगी के लिए आसानी रखी गई है। (तो तुम में जो बीमार हो।

(सूरः बकरः आयत 166)

रोजा तोड़ने की उसको इजाजत दी गई है, खड़े होकर नमाज न पढ़ सके तो बैठकर और बैठने की भी ताकत न हो तो लेट कर नमाज पढ़ने का हुक्म है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब अल्लाह तआला ने उससे अपने फराइज माफ कर दिए या उनसे इतनी कमी कर दी तो लोगों को अपने अखलाकी हक के लेने में कितनी कमी कर देनी चाहिए।

इस्लाम ने रोगी की तकलीफ को जिस पर वह सब (धैर्य) शुक्र करता है उसके लिए गम की जगह खुशखबरी की चीज बना दिया है।

इस्लामी नजरिया यह है कि मुसलमान को दुनिया में जो तकलीफ भी पहुंचती है वह उसके गुनाह का कफ़्फारा (बदला) बन जाता है, अगर वह बीमार हो जाए और सब्र के साथ बीमारी की तकलीफों को बर्दाश्त करे तो आखिरत के कठोर अजाब (दण्ड) से बचाने के लिए वह उसके गुनाहों का बदला बन जाता है और वह पाक व साफ हो जाता है।

(मुस्लिम, अबूदाऊद)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोगियों की इयादत का विशेष रूप से हुक्म दिया है, उसके आदाब व ढंग सिखलाए हैं, उसकी दुआएं सिखाई हैं और उसका सवाब बताया है। फरमाया ''जो कोई किसी मुसलमान के गम को हल्का करेगा अल्लाह तआला उसके गम को हलका करेगा।

(अबूदाऊद)

और यह भी फरमाया कि एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं ''जिनमें एक यह है कि जब वह बीमार पड़े तो उसकी इयादत करे।'' (बुखारी)

सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि आप सल्ल. ने हम को सात बातों का हुक्म दिया जिन में से एक बीमार की इयादत है। (बुखारी)

आप (सल्ल0) ने फरमाया जब कोई सुबह को किसी बीमार की इयादत करता है तो शाम तक फरिश्ते उसकी बखशिश की दुआ मांगते हैं और जब रात को इयादत करता है तो सुबह तक फरिश्ते उसकी मगफिरत के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते हैं। (अबू दाऊद)

यह भी आया है कि जब कोई किसी बीमार की इयादत को जाता है तो वापसी तक जन्नत के मेवे चुनता रहता है।

(मुस्लिम)

फरमाया ''जब कोई किसी की इयादत के लिए जाए तो उसके हाथ और माथे पर हाथ रखे, और उसको दिलासा दे और उसके अच्छा होने के लिए अल्लाह तआला से दुआ करे।

(अबू दाऊद)

आप सल्ल0 और आप की शिक्षा से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को बीमारों की इयादत का इतना ध्यान व एहतिमाम था कि वह उसको एक इस्लामी हक समझते थे बल्कि इसमें अपने और पराए, मुस्लिम और नान मुस्लिम का भी कोई अन्तर न था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों की इयादत की है। (बुखारी)

मुनाफिकों की भी इयादत के लिए आप गए हैं। (बुखारी) और इसी हदीस के कारण उलमा किराम ने नान मुस्लिम की इयादत की इजाजत दी है।

(मजमउल बिहार)

हजरत सअद बिन मआज रज़ियल्लाहु अन्हु जब जख्मी हुए तो आप सल्ल0 ने उनका खेमा (तम्बू) मस्जिद में लगवाया ताकि बार–बार उनकी इयादत की जा सके। (अबू दाऊद)

हजरत रूफैदा रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया थीं जो सवाब के लिए घायल लोगों का उपचार और उनकी सेवा किया करती थीं उनका खेमा भी उसी मस्जिद में रहता था ताकि युद्ध में घायल हो जाने वाले मुसलमानों की मरहम पट्टी करें।

(सीरते इब्ने हिशाम)

गज़्वात और युद्धों में भी कुछ औरतें साथ रहती थीं जो बीमारों की सेवा और घायलों की मरहम पट्टी किया करती थीं।

(मुस्लिम)

आप (सल्ल0) ने बगैर किसी भेद–भाव व अन्तर के अपने अनुयाइयों को यह हुक्म दिया है कि भूके को खिलाओ कैदी को छुड़ाओ और रोगी की इयादत करो।

(मुस्नद अहमद)

एक बार आप (सल्ल0) ने इयादत की फजीलत (नीचे लिखे हुए दिल को मोह लेने वाले) बहुत ही प्रभावशाली ढंग से बताई है कि क़यामत में अल्लाह तआला पूछेगा कि ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार पड़ा तूने मेरी इयादत न की वह कहेगा ऐ मेरे रब! तू तो सारे दुनिया का पालनहार है मैं तेरी इयादत कैसे करता? अल्लाह तआला फरमाएगा क्या तुझे ख़बर न हुई कि मेरा फुलां बन्दा बीमार हुआ मगर तूने उसकी इयादत न की अगर तू करता तो मुझे उसके पास पाता। (मुस्लिम)

तअलीम के इस ढंग में बीमारों की इयादत उनकी सहायता और उनकी खिदमत व सेवा करने की कैसी हिदायत की गयी है। और ऐसा रोगी जो कि सब्र – (धैर्य) व शुक्र से काम लेता है उसकी कैसी हिम्मत बढ़ाई गई है, कि मानो उसका रब उसके सरहाने खड़ा है और अपनी मेहरबानियों और रहम की नजर उस पर डालता रहता है और उसके पद और दर्जे को बढ़ाता रहता है और कैसे भाग्यशाली हैं वह लोग जो इन रोगियों की सेवा करके अल्लाह तआला के निकट होते जाते हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः कुछ लोग कहते हैं कि मर्दों के लिए एक दिरहम वज़न की चाँदी की अंगूठी पहनना मस्नून है सही क्या है? किसी और धातु की अंगूठी पहनने का क्या हुक्म है?

उत्तरः मर्दों के लिए एक मिस्क़ाल (4 ग्राम 374 मिली ग्राम) वज़न की या उससे कम वज़न की चांदी की अंगूठी पहनना दुरुस्त है। (मजमउल अनहारः 4/196) अगर कोई अंगूठी न पहने तो कोई हरज नहीं मर्दों के लिए सोने की अंगूठी पहनना हराम है किसी और धातु की अंगूठी पहनना मर्दों के लिए मकरूह है।

प्रश्नः नगदार अंगूठी पहनने का क्या हुक्म है? कुछ लोग कहते हैं कि बाज नगों में यह खासियत होती है कि उस नग के साथ अंगूठी पहनने वाला बलाओं से महफूज़ रहता है ऐसा अ़क़ीदा रखने का क्या हुक्म है?

उत्तरः नगदार अंगूठी पहनना जाइज़ है लेकिन किसी नग के बारे में यह अकीदा रखना कि वह बलाओं से बचाता है शिर्किया अकीदा है उस से बचना लाजमी है।

प्रश्नः मेरे इलाके के कुछ सुननी मुसलमान सफर के महीने में शहादते हुसैन का चालीसवां मनाते हैं, आशूरा की शाम की तरह चबूतरे या तख़्त पर ताजिया रखते हैं, नौहा पढ़ते हैं, ढोल ताशा झाँझ का बाजा बजाते हैं, दिन में वह ताजिया बाजे गाजे के साथ और मरसिया पढ़ते हुए ले जा कर दफ़्न करते हैं और कहते हैं यह सब हुसैन की याद और मुहब्बत में करते हैं, शरीअत में इस अमल का क्या हुक्म है?

उत्तरः हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत का चहल्लुम या चालीसवां मनाना जाइज़ नहीं, उसमें ताजिया रखना उसके गिर्द चरागां करना, नौहा पढ़ना, मातम करना, बाजा बजाना और बाजे गाजे के साथ ताजिया दफ्न करना यह सारे काम नाजाइज़ हैं, किसी वफात पाये या शहीद हुए मुसलमान की मुहब्बत में उस के लिए मगफ़िरत की दुआ करना चाहिए, अल्लाह की राह में कुछ खर्च करके और कुरआन की तिलावत कर के ईसाले सवाब करना चाहिए, जो काम चालीसवां के सिलसिले में कुछ सुन्नी मुसलमानों की तरफ मन्सूब किये गये हैं सुन्नी मुसलमानों को चाहिए कि उन से तौबा करें और हज़रत हुसैन रज़ि0 के नाना की शरीअत पर चलें।

प्रश्नः मुशतरक खान्दान (संयुक्त परिवार) में चचाजाद भाई से पर्दे का क्या हुक्म है?

उत्तरः चचाज़ाद, खालाज़ाद, मामूज़ाद भाई शरीयत की निगाह में नामहरम हैं और नामहरम रिश्तेदारों से भी शरई पर्दा ज़रूरी है। लेकिन संयुक्त परिवार में जहाँ हर समय आमना सामना रहता हो तो औरत पर एहतियात लाज़िम है, कि वह अपने आपको शरीयत का पाबन्द करे।

प्रश्नः आजकल माशा अल्लाह हाजियों की अधिकता के कारण मिना में सब जगहें भर जाती हैं और मुजदल्फा में हाजियों के खेमे लगाये जाते हैं ऐसी सूरत में जो हाजी मुजदल्फा के खेमे में ठहरते हैं उन को मिना में ठहरने की सुन्नत छोड़ना पड़ती है उन के लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः इमाम अबू हनीफा और दूसरे बाज इमामों के नजदीक जमरात (शैतानों) को कंकरियां मारने के दिनों में मिना में ठहरना सुन्नत है, इसलिए उज़्र

के बिना जमरात को कंकरियां मारने के दिनों में मिना के बजाय मुजदल्फा में हाजी का ठहरना सुन्नत के खिलाफ होगा। परन्तु आज कल मिना में जगह न मिलने के सबब शासन मजबूरन मुजदल्फा में खेमें लगवाता है अतः हाजियों के लिए मुजदल्फा में ठहर कर रमी करना मकरूह नहीं है, रिवायत में है कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास के जिम्मे हाजियों को पानी पिलाने का काम था उन्होंने चाहा कि वह इस ख़िदमत के लिए मिना की रातें मक्के में बिताएं अतः उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस की अनुमति मांगी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के में ठहरने की इजाजत दे दी (मुस्लिमः 7713) इस रिवायत से मालूम हुआ कि ज़रूरत पड़ने पर मुजदल्फा में हाजी ठहर सकते हैं।

प्रश्नः एक शख़्स ने अपने खेती की ज़मीन का तीन साल का किराया पेशगी लेकर किसी को किराये पर दे दिया क्या ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः ज़मीन का जो लगान आम तौर पर होता है, उतने ही मिक़दार के हिसाब से पेशगी किराया पर अगर ज़मीन दी जाती है तो यह दुरुस्त है और इसे पेशगी लगान किराया कहा जाएगा।

(शरहे मजल्ला 261/1)

प्रश्नः हुकूमत बहुत से काम ठेके पर देती है जैसे सरकारी इमारतें बनवाना वग़ैरह क्या ठेका लेने का पेशा इख़्तियार करना दुरुस्त है?

उत्तरः ठेका लेना दुरुस्त है, मौजूदा दौर में सारी तफसीलात तै हो कर ठेका दिया जाता है इसलिए इसके करने में शरअ़न कोई हरज नहीं अलबत्ता यह ज़रूरी है कि मुआहदा के मुताबिक़ काम हो और धोखा धड़ी न हो हदीस में आता है–

अनुवादः मुसलमानों के लिए शराइत के मुताबिक मुआमला करना दुरुस्त है मगर ऐसी कोई शर्त न हो जो हलाल को हराम करदे या हराम को हलाल करदे।

(तिर्मिजी 251/1)

प्रश्नः क्या साल भर की तनख़्वाह पेशगी लेना दुरुस्त है? बाज़ कम्पनियां ऐसा करती हैं।

उत्तरः जिस तरह माहाना तनख़्वाह का मुआमला दुरुस्त है उसी तरह साल भर के पैकेज पर मुआमला करना और पेशगी लेना दुरुस्त है अल्लामा ज़ैलई ने इसको दुरुस्त करार दिया है।

(तबयीनुल हक़ाइक़ 123/5)

प्रश्नः चार लोगों ने मिलकर एक दुकान की उनमें से दो उस दुकान पर तनख़्वाह लेकर काम करते हैं क्या ऐसा करना दुरूस्त है?

उत्तरः जब यह दोनों शरीक हैं तो उसी दुकान पर तनख्वाह लेना दुरुस्त नहीं है अलबत्ता काम करने की वजह से अगर नफ़ा में कुछ ज़्यादा हिस्सा इन दोनों के लिए तमाम पार्टनर तजवीज़ करलें तो यह दुरुस्त है, और नफ़ा का ज़ाइद हिस्सा ज़ाइद काम का बदल हो जायेगा।

प्रश्नः एक किरायेदार मालिके मकान से यह शर्त लगाता है कि जब तक मैं इस मकान में रहूं मुझ से मकान ख़ाली न कराया जाए न किराया बढ़ाया जाये, किरायादार यह शर्तें इसलिए लगाता है कि उसने मालिके मकान को भारी क़र्ज़ दे रखा है क्या ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः मकान ख़ाली न कराने और किराया न बढ़ाने की शर्त सही नहीं है इससे मुआमला किरायेदारी फ़ासिद हो जाता है।

(फतावा हिन्दिया 442/4)

प्रश्नः नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने और पैदा होने वाले बच्चे के कानों में अज़ान व इक़ामत कहने की उज़रत लेना कैसा है?

उत्तरः अस्ल यह है कि इबादत पर उजरत लेना ज़ाइज नहीं है, इसलिए नमाज़े जनाज़ा और बच्चे के कान में अज़ान देने की उज़रत लेना जाइज़ नहीं है।

(दुर्रुल मुख़्तारः 55/6)

❖❖❖

हया की हिफाजत

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

कीमती जौहर को, रखना है हिफाज़त से।
औरत रहे पर्दे में, रखना है हिफाज़त से ।।
हिन्द की तहजीब में, घूंघट भी है निशानी!
तहजीब यह अच्छी है, औरत है हिफाज़त से।।
ईमान का एक शोबा, देखो तो हया भी है।
शोबये हया को, रखना है, हिफाज़त से।।
औरत रहे पर्दे में, कुरआन का फरमान।
कुरआन के फरमान को, रखना है हिफाज़त से।।
औरत रहे हया से, वह बेहया नहीं है।
अल्लाह का फरमान है रखना है हिफाज़त से।।
माडर्न औरतों में, तहजीब नहीं है।
इस्लाम की तहजीब को, रखना है हिफाज़त से।।
इस्लाम के क़ानून को, चलना है क़यामत तक।
ईमान के शोबे को, रखना है हिफाज़त से।।
सिद्दीकी कह रहा है बेहयाई रोको।
इंसानियत के शोबे को, रखना है हिफाज़त से।।

❖❖❖

अपना काम खुद करना चाहिए

इदारा

एक आदमी सर पर लकड़ियों का गट्ठर लिए चला जा रहा था। आश्चर्य ये कि समस्त अरब ये जानता था कि इस आदमी के पास सैकड़ों गुलाम हैं, रूपये पैसे की रेल–पेल है, लम्बा–चौड़ा कारोबार है। फिर भी उसे सामान ढोने की क्या आवश्यकता?

इस्लाम में अपना काम स्वयं करने पर खूब उभारा गया है। हमारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो सारे जहां के सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम व्यक्ति थे, वह भी अपना काम स्वयं करते थे। अपने फटे कपड़े सीते, जूते फट जाने पर उसे दुरुस्त करते, बकरी का दूध दूहते आदि।

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर पर होते तो किसी नौकर को आटा गूंधते देखते तो उसके साथ बैठ जाते और उसके साथ आटा गूंधने लग जाते।

खैर! बात उन साहब की हो रही थी जिन्होंने सर पर गट्ठर लाद रखा था। जो साहब सर पर गट्ठर लादे हुए थे वह उस समय विश्व के सबसे बड़े शासक थे। क्षेत्रफल की दृष्टि से वह सबसे बड़े साम्राज्य के हाकिम तो थे ही साथ ही वह तमाम मुसलमानों में सबसे धनी व्यकित भी थे। लोगों ने इस हालत में देखा तो सलाम अर्ज किया और बोले, अरे अमीरुल मोमिनीन! आपने सर पर भारी गट्ठर क्यों धर रखा है? अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि0 ने जवाब दिया, मेरे प्यारे दोस्तो! अपने दिल को आजमा रहा हूं और देख रहा हूं कि लोगों के सामने अपना काम करने में मुझे झिझक तो महसूस नहीं होती।

हज़रज उस्मान रज़ि0 का अपने मन को भांपने के साथ–साथ मुसलमानों को एक बार फिर ये सबक याद दिलाना मकसूद था कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपना हर कार्य स्वयं अपने पवित्र हाथों से करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0 बड़े ही नर्म दिल और शर्म व हया वाले थे। और सबसे बड़ी बात कि वह बड़े ही दानशील थे। इस्लाम के प्रचार–प्रसार और मान–सम्मान हेतु दिल खोल कर खजाना लुटाते थे। हज़रत उस्मान रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियों की शादी उनसे हुई थी। एक के निधन के बाद दूसरी बेटी से शादी की। हज़रत उस्मान रज़ि0 अल्लाह से बहुत डरने वाले थे, खास तौर से अज़ाबे कब्र से। जब भी कब्र की चर्चा होती तो इतना रोते की दाढ़ी तर हो जाती ।

हज़रत उस्मान रज़ि0 अपने प्रशासनिक अधिकारियों को सख़्त ताकीद करते थे कि जनता के साथ वह दया तथा प्रेम भाव से पेश आएं। अधिकारियों को सदैव चेताया करते कि वह केवल तहसीलदार

हो कर न रह जायें बल्कि टैक्स वसूली के साथ–साथ उन्हें आराम भी पहुंचाएं। लगान आदि की वसूली के साथ इस ओर विशेष ध्यान दें कि भूमि सुधार तथा निर्माण कार्य में ढ़िलाई न होने पाये।

उन्होंने यात्रियों के लिए सड़कें, सरायें और कुएं खूब ढेर सारे बनवाए, ताकि उन्हें तनिक भी कष्ट न हो। उनका नियम था कि जुमे की नमाज़ से पहले ऐलान करते कि यदि किसी को कुछ कहना हो अथवा किसी गवर्नर या अधिकारी की शिकायत करनी हो तो बिला झिझक करें। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष हज के समय अधिकारियों को तलब करते और फिर ऐलान करते कि यदि किसी अधिकारी से किसी को कोई शिकायत हो तो निडर हो कर कहे। आप रज़ि0 कहा करते थे कि मैं शक्तिशाली के मुकाबले निर्बल के साथ हूँ।

आप रज़ि0 लोगों के साथ मिल–जुल कर रहते और बड़ी नर्मी से पेश आते ताकि उन्हें कुछ कहने में परेशानी न हो। दोपहर के समय मस्जिद में ही आराम करते। चादर सिर के नीचे रख लेते और फर्श पर लेट जाते। उठते तो जिस्म पर कंकड़ियों के निशान बन जाते। किसी को कुछ कहना–सुनना होता तो मस्जिद में ही अपनी बात रख देता और आप वहीं निर्णय दे देते।

इतिहासकारों ने उनकी दानशीलता पर बहुत कुछ लिखा है उसमें ये भी है कि वह लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते और स्वयं सिरका तथा तेल खाते थे। वस्त्र भी मामूली पहनते थे। पत्नियों को भी साधारण वस्त्र धारण करने को कहते।

अल्लाह ऐसे आदर्श शासकों की आदतें और प्रवृत्ति हमारे शासकों में भी डाल दे ताकि एक आदर्श शासन की स्थापना हो।

आमीन

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

रमज़ानुल मुबारक के बाद

हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने रमजान का मुबारक महीना प्रदान किया रोजा रखने की तौफीक दी रमजान के अन्तिम अशरे (दहे) की शुभरात ''लैलतुल कद्र'' में इबादत की तौफीक दी, अल्लाह तआला जो गफूर है, गफ्फार है, रहीम है, रहमान है, उस से हर मुसलमान मर्द तथा औरत को आशा है कि वह अपने रोजेदार तथा रमजान का सम्मान करने वाले बन्दों को क्षमा करके जहन्नम की आग से अवश्य बचा लेगा और उनके लिए उन तमाम पुरस्कारों का फैसला कर दिया होगा जिन का उसने वादा किया है।

अब रमजान के बाद भी अल्लाह तआला के जिक्र को जारी रखना, उसके पवित्र कुरआन का प्रति दिन पाठ करना पापों से बचना, भले कामों में भाग लेना, नमाज़ों की पाबन्दी करना अगर व्यापारी हो तो ईमानदारी से अपने फराइज अंजाम देना और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नत को अपनाये रहना यह वह काम हैं जिन को अगर हम रमजान के बाद भी अपनाये रहेंगे तो हमारी दुनिया भी बनेगी और आखिरत में भी सफलता मिलेगी।

❖❖❖

मां–बाप के साथ सद्व्यवहार

अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी को मुख़ातब करते हुए तमाम ईमान वालों से कहता है कि ऐ लोगो तुम्हारा रब आदेश देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना मत करो और अपने माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार करो, वह दोनों बूढ़े हो जाएं और उनमें से कोई एक या दोनों तुम को बुढ़ापे में मिलें तो उनकी ख़ूब सेवा करो उनकी सेवा करने में तुम्हारे मुख से कभी ''उफ़'' न निकले, उन पर तुम्हें कभी गुस्सा न आये, तुम कभी भी उनको गुस्से से झिड़को नहीं और उनसे जब भी बात करो नर्मी से बात करो, अदब से बात करो और उनके सामने अपने को झुकाए रखो अर्थात उनके सामने सदैव नम्रता प्रकट करो तथा दया और आदर का भाव ज़ाहिर करो, उनके लिए दुआ़ करो कि ऐ अल्लाह जिस तरह इन दोनों ने बचपन में प्यार व मुहब्बत से मुझको पाला पोसा है इनके बुढ़ापे में तू इन पर दया व कृपा कर।

(सूरः बनी इस्राईलः 23–24)

दूसरी जगह अल्लाह तआला फरमाते हैं कि ''और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ–बाप के विषय में ताकीद की है, उसकी माँ ने निढाल पर निढाल हो कर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसको दूध छोड़ने में लगे, कि ''मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ–बाप के प्रति भी। अन्ततः मेरी ही ओर आना है।''

(सूरः लुकमानः 14)

❖❖❖

संसार में सबसे अहम माता-पिता

मुहम्मद इक़बाल नदवी

सांसारिक जीवन में जो किरदार और भूमिका संतान के प्रति माता–पिता की होती है उसका इनकार नहीं किया जा सकता है। माँ–बाप उस घने छायादार पेड़ की तरह होते हैं जो खुद तो हर सुख दुख को झेलते हैं हर मौसम के उतार चढ़ाव को झेलते हैं फिर भी संतान को मीठे और स्वादिष्ट फल और छाया प्रदान करते हैं ठीक इसी प्रकार संतान के प्रति माँ–बाप बड़ी सी बड़ी कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों से गुज़रते हुए भी अपनी संतान के सुख चैन की खातिर खड़े रहते हैं। इस संसार में इन्सान को अगर सच्चा और निःस्वार्थ प्यार मिलता है तो वह माँ–बाप का प्यार होता है अपनी संतान की परवरिश के प्रति वह हर प्रकार का त्याग देते रहते हैं। उनकी खुशियों के लिए अपनी खुशियों को कुरबान करना केवल माँ–बाप ही कर सकते हैं क्योंकि जब से संतान इस संसार में आती है उस वक्त से लेकर जवान होने तक अनेकों प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं माँ अपने बच्चे को नौ महीने तक गर्भ में रखती है फिर जन्म के समय जीवन और मृत्यु से लड़ती हुई बच्चे को जन्म देती है उसके बाद दिन रात बच्चे के लिए बेचैन रहती है पिता परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए घर के बाहर खून पसीना बहाता है, उसके लिए इन दोनों हस्तियों का सच्चा प्यार और त्याग इस बात का प्रमाण है कि वास्तविक तौर पर माँ–बाप का वजूद खुदा का अनमोल वरदान है, जिसका कोई उदाहरण नहीं है हर धर्म में मता–पिता की सेवा करना उनसे प्यार व मुहब्बत से पेश आना उच्च कोटि के नैतिक कार्यों में शुमार होता है। क्योंकि यही बच्चे के पहले शिक्षक भी होते हैं जो उसको चलना फिरना बोलना बात करना सिखाते हैं।

दुनिया के हर व्यक्ति के काम करने का एक निर्धारित समय होता है उसके बाद वह स्वतंत्र हो जाता है और अपने कार्य की मज़दूरी लेता है लेकिन कडाके की ठंडक हो या गर्म लू के झोंके दिन का उजाला हो या रात का घटाटोप अन्धेरा खुशी हो या ग़म परन्तु औलाद के आराम व सुकून के लिए वह हर वक़्त तैयार रहते हैं उसके लिए न कोई लालच होता है और न कोई धन दौलत की मांग वह लगातार अपने काम में लगे रहते हैं। इनकी सेवाओं का कोई बदला चुका भी नहीं सकता है एक साहब अपनी माँ को अपने कन्धे पर बिठा कर हज कराते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से कहते हैं क्या मैंने अपनी माँ का हक़ अदा कर दिया वह जवाब में कहते हैं कि तुमने तो उस एक चीख का भी हक़ नहीं अदा किया जो जन्म के वक़्त तुम्हारी माँ ने निकाली थी, हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि माँ–बाप ही तुम्हारी जन्नत हैं, वही तुम्हारी नर्क हैं इसका मतलब है कि उनकी सेवा करके जन्नत के हक़दार अपने आपको बना सकते हो और उनका अनादर करके अपने लिए नर्क में जगह बनाना है।

आज के इस आधुनिक युग में जहां बहुत कुछ विकास और तरक्की हो रही है वहीं औलाद अपने माँ–बाप का कहना नहीं मानती है वह अपने दोस्तों और मित्रों से तो अच्छा बर्ताव करते हैं मगर अपने माँ–बाप के साथ अच्छाई से पेश नहीं आते हैं। बल्कि कुछ पढ़े लिखे लोग वृद्ध अवस्था में अपने माँ–बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं भला बताइए कैसे एक अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है। और कैसे उन घरों में खुशहाली आयेगी जिनके माँ–बाप वृद्धाश्रम में होते हैं और वहां वह रोते हैं, माँ–बाप के दो आँसू औलाद के सपनों के ठोस से ठोस महल को गिराने के लिए काफी होते हैं।

लानत है ऐसी औलद पर जो इन महान हस्तियों को बुढ़ापे की हालत में दुख पहुंचाते हैं, ख़राबी है ऐसी संतानों के लिए जो माता पिता से अभद्र और कठोर भाषा में बात करते हैं उनका दामन कैसे खुशियों से भरेगा। जिनके पास अपने दोस्तों के लिए तो समय है मगर माँ–बाप के लिए नहीं कैसे उस समाज में नैतिकता उत्पन्न होगी जहां ऊँचे स्वर में माँ–बाप से बात की जाएगी। जिनका प्यार त्याग और मार्गदर्शन हमारे जीवन को सही दिशा देता है। बड़े हो कर हम उन्हीं के साथ असभ्य बर्ताव करें इसकी कोई भी समाज अनुमति नहीं देता है। याद रखिए अगर माँ–बाप खुश और प्रसन्न हैं तो ख़ुदा भी आप से प्रसन्न हैं यदि वह नाखुश हैं तो खुदा भी खुश नहीं है। कुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का स्पष्ट आदेश देता है। तुम अपने रब के सिवा किसी की इबादत न करो और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो।

यदि वह दोनों या उनमें से कोई एक बुढ़ापे की हालत में पहुंच जाते हैं तो उनको उफ भी न कहो और ना ही उन्हें झिड़को बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो। (सूरः बनी इस्राईल–23) यह आयत स्पष्ट करती है कि प्रेम पूर्वक व्यवहार करना उनके साथ हर संतान का कर्तव्य है।

अगर हर वर्ग और हर समाज का पढ़ा लिखा वर्ग इसकी ओर ध्यान केन्द्रित करे तो हमारे समाज में खुशियाँ उत्पन्न होंगी। बुजुर्ग और बूढ़े लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता की चमक होगी और संसार से जाते वक़्त माता पिता को गर्व होगा कि उनके जीवन भर की मेहनत और परिश्रम ने अचछे फल दिए तो आइए कुछ मुख्य बातों का संकल्प लें कि हम उनका पालन करेंगे –

1. प्रत्येक दिन माता पिता के लिए कुछ समय निकालना।
2. उनकी ज़रूरतों की तरफ़ ध्यान रखना।
3. उनसे अच्छे स्वर में बात करना।
4. अपने कामों में उनसे सलाह लेना और अगर सलाह अच्छी हो तो उसका पालन करना।
5. अपने और अपने बाल बच्चों के लिए उनकी दुआ लेना।
6. उनके कठोर शब्दों को मुस्कुराकर सहन कर लेना।
7. उनकी ओर प्यार भरी निगाह से देखना।
8. उनके प्रति दुआ करना।
9. उनकी नेक और अच्छी ख्वाहिशों को क्षमता पूर्वक पूरा करना।
10. बीमारी की हालत में उनके स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रखना।
11. उनके उच्च आदर्शों और संस्कारों को अपने जीवन में लागू करना ताकि हमारा समाज उच्च आदर्शनीय बन सके।

(लेखकः उस्ताद माहद सिकरौरी
दारुलउलूम नदवतुल उलमा,
लखनऊ)

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

कारख़ाने का चक्कर

मायल ख़ैराबादी

मेहनतपुरः—

''अच्छा तो नूरपुर में भी कारखाने वाली बात पहुँची। वहाँ से सबसे पहले दयानतुल्लाह का इकलौता बेटा अमानतुल्लाह मेहनतपुर की ओर चला। लोगों ने उसे डराया कि वहाँ के लोग लड़कों को मुर्गा बना देते हैं, मगर अमानतुल्लाह डरा नहीं। उसकी उम्र चौदह वर्ष की थी और वह इस्लामी दरसगाह से नया नया पास होकर आया था। उसने कहा, ''भाई! डर तो बस अल्लाह का, उन लड़कों ने कोई ग़लती की होगी तभी तो मुर्गा बना दिये गये, मैं अल्लाह के भरोसे पर मेहनतपुर ज़रूर जाऊँगा।'' और फिर दूसरे दिन अमानतुल्लाह वास्तव में मेहनतपुर की ओर चल दिया।

वह सुबह सवेरे मुँह अंधेरे ही घर से चल खड़ा हुआ। वह रास्ते में सुस्ताया नहीं, बस चलता ही रहा, चलते चलते घण्टे दो घण्टे दिन चढ़े वह मेहनतपुर गाँव के पास पहुँच गया। देखा तो गाँव के चारों ओर चारदीवारी बनी हुई है। उसने सोचा गाँव के अन्दर जाने का रास्ता कहीं न कहीं होगा ज़रूर। वह इधर उधर घूम कर दरवाजा तलाश करने लगा। आखिर उसे दरवाज़ा मिल गया। दरवाज़े पर एक तरफ एक सन्तरी खड़ा था और दूसरी तरफ एक नक्कारा रखा था, जिसकी चोब नक्कारे पर ही रखी थी, वहीं एक ओर बहुत से लड़कों को मुर्गा बने देखा, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। सन्तरी के पास गया, अस्सलामुअलैकुम कहकर मुसाफहे के लिये हाथ बढ़ा दिये। सन्तरी अमानतुल्लाह के अदब और कायदे से बहुत खुश हुआ, सलाम का जवाब दे कर मुसाफहा किया और बोला, ''ऐ नेक लड़के! तुम्हारा आना मुबारक! तुम अच्छे लड़के हो, देखो एक ये सब हैं (सन्तरी ने मुर्गो की तरफ इशारा करते हुए कहा) इनमें से एक ने भी तो सलाम नहीं'' किया। नक्कारा और चोब रखे देखा तो समझे कोई खेल है, बस बढ़े और वे बिना पूछे गधे भड़ भड़ भड़ भड़ लगातार नक्कारा बजाने लगे। इस बदतमीजी पर इन्हें मुर्गा बना दिया गया।

भला यह भी कोई क़ायदा है? इनको अदब सिखाने के लिये हकीम साहब के हुक्म से मुर्गा बना दिया गया है, अब जब हकीम साहब हुक्म देंगे तब ही ये लड़के इस सजा से छूटेंगे।''

अमानतुल्लाह ने सन्तरी से हकीम साहब का पता पूछा। सन्तरी ने कहा, ''गाँव के अन्दर चले जाओ, थोड़ी दूर पर मस्जिद है। हकीम साहब का पता मस्जिद के इमाम साहब बतायेंगे।''

अमानतुल्लाह चल दिया। थोड़ी दूर पर एक बड़ी सुन्दर मस्जिद थी। अमानतुल्लाह मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ पढ़ कर मस्जिद में दाख़िल हुआ। जूते उठाकर क़ायदे से एक तरफ रख दिये। वुजू किया, दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ी। सलाम फेरा तो पास में इमाम साहब को खड़ा देखा। खड़े होकर सलाम किया, मुसाफहा किया। इमाम साहब बोले, ''अच्छे लड़के! तुम्हें देखकर जी खुश हो गया। तुमने मस्जिद में आकर सब काम कायदे से किये।

अमानतुल्लाह ने कहा, ''इमाम साहब! मुझे मेरे उस्ताद ने मस्जिद के सारे नियम सिखा दिये हैं। अब आपसे एक अर्ज है कि मेहरबानी फरमाकर आप मुझे हकीम साहब का पता बता दें, अल्लाह आपको इसका अज्र देगा।

यह सुनकर इमाम साहब अमानतुल्लाह को समझाने लगे, ''मियाँ साहबजादे! हकीम साहब से मिलने के लिये तुम्हें बड़ा कष्ट झेलना पड़ेगा। तुम दुबले पतले और कम उम्र लड़के हो तुम रास्ते का कष्ट न झेल सकोगे, बहुत दिन हुए कुछ लड़के हकीम साहब से मिलने गये। लेकिन वे किसी मुसीबत में फंस गये। तुम मेरा कहा मानो, तुम्हारी बातें सुनकर मुझे तुम पर तरस आता है। आओ मैं तुम्हें इस मस्जिद का मुअज़्ज़िन (अजान देने वाला) बना दूँ। बस मजे से पाँच वक़्त अज़ान दिया करो, आराम से रोटी खाते रहोगे, तुमको कोई कष्ट न होगा।

रोटी कपड़े का नाम सुना तो अमानतुल्लाह ने इमाम साहब को धन्यवाद दिया और कहा, ''जनाब! रोटी कपड़े की कमी तो मुझे घर पर भी न थी, फिर मेरा अक़ीदा और ईमान है कि अल्लाह पालनहार है, उसने सब जीवों को भोजन देने का वादा किया है, वह मुझे भी रोज़ी देगा, अब वह बन्दे की दौड़ धूप और कोशिश पर है कि वह किस तरीक़े से रोज़ी लेना चाहता है। तो मेरा इरादा है कि मैं मिठाई के कारखाने में काम करके रोजी कमाऊँ, आप कृपा करके हकीम साहब का पता मुझे बता दें। हकीम साहब की सनद के बिना कारखाने का सेठ किसी को कारखाने में घुसने भी नहीं देगा।''

यह सुनकर इमाम साहब ने कहा, ''बेटे! तुम बहुत समझदार हो, मुझे उम्मीद है कि तुम हकीम साहब तक ज़रूर पहुँचोगे। अच्छा अब तुम मुहल्ला समतापुर चले जाओ, उस मुहल्ले के चौधरी शैख करम इलाही हैं, उनसे जाकर मिलो, वे चाहेंगे तो तुम हकीम साहब तक पहुंच जाओगे। अच्छा ख़ुदा हाफ़िज़ अस्सलामु अलैकुम।''

समतापुरः—

समतापुर का अता पता पूछ कर अमानतुल्लाह उधर चला। उस मुहल्ले में पहुंच कर उसने देखा कि यहाँ हर प्रकार का काम होता है और बड़े बड़े लोगों के लड़के यहाँ काम सीख रहे हैं। कोई बढ़ई का काम सीख रहा है, तो कोई लुहारी का, कोई चमड़े का काम तो कोई कपड़ा बुनने का, कोई सिलाई का काम तो कोई मोची का। अर्थात हर प्रकार के पेशे वहाँ हो रहे थे, सब मेहनत से काम कर रहे थे और कोई किसी पेशे से शर्माता नहीं था, न किसी को छोटाई बड़ाई का विचार। अमानतुल्लाह उन लोगों की मेहनत और काम की लगन देख कर बहुत खुश हुआ। उसने एक लड़के से चौधरी शैख करम इलाही का पता पूछा। लड़के ने पहले गौर से अमानतुल्लाह को देखा और फिर साथ हो लिया और चौधरी साहब के घर पहुँचा दिया, और फिर अपने काम पर चला गया।

चौधरी शैख करम इलाही साहब उस वक़्त बैठे अपनी पुरानी जूतियाँ अपने हाथों से गाँठ रहे थे, सुतारी लिये कुछ टांके लगा रहे थे कि अमानतुल्लाह पहुँचा, सलाम किया और एक ओर अदब से बैठ गया। शैख साहब ने नज़र ऊपर उठाई, सलाम का जवाब दिया, फिर सुतारी रख कर मुसाफहा किया। फिर उठ कर घर में गये, वहां से

सत्तू लिये हुए वापस आये। अमानतुल्लाह से कहने लगे, ''आप मुसाफ़िर मालूम होते हैं, आप थक भी गये होंगे, भूखे प्यासे भी होंगे, लीजिये यह सत्तू पी लीजिये, फिर आप जहाँ जाना चाहेंगे, आराम से पहुँचा दिया जायेगा।''

अमानतुल्लाह उस वक़्त वास्तव में भूखा था। उसने बड़े चाव से सत्तू पिया। इसके बाद शैख साहब ने भी समझाया कि हकीम साहब से मिलने का इरादा छोड़ दे, उनसे मिलने के लिये जान बड़ी जोखिम में डालना होगी। लेकिन जब अमानतुल्लाह ने आग्रह किया तो शैख साहब बोले, ''अच्छी बात है, तो लीजिये मियाँ, जरा यह मेरा चमड़े और औजारों का बक्स उठा लीजिये और बाज़ार तक पहुँचा दीजिये, बाज़ार ही से हकीम साहब के घर का रास्ता बता दूँगा।''

यह सुनना था कि अमानतुल्लाह ने झट बक्स उठा लिया, अपने सिर पर रखा, बक्स बड़ा वजनी था, लेकिन अमानतुल्लाह ने परवाह न की, लेकर चला, रास्ते में उसने बहुत से लड़कों को मुर्गा बने देखा–शैख साहब ने बताया कि ये भी हकीम साहब से मिलने यहाँ तक आये थे, लेकिन जब मैंने कहा कि ये बक्स बाज़ार तक पहुँचा दो तो बोले, ''हम कोई मजदूर तो हैं नहीं, हम तो नहीं ले जा सकते बक्स।''

इस तरह की बातें सुनीं तो मुझे बड़ा बुरा लगा। भला सोचने की बात है, नबियों ने कैसे कैसे पेशे किये हैं, किसी ने खेती का काम किया है, किसी ने बकरियाँ चराई हैं, कोई कवच बनाता था, कोई कपड़ा बुनने का काम करता था। इसी तरह प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी बकरियाँ चराईं। आप सल्ल० अपने जूते भी अपने हाथों से गांठ लेते थे। आप सल्ल० के सहाबा रज़ि० ने हर तरह के काम किये हैं। और फिर आखिर में हमारे इमामों में से कोई दर्ज़ी था, कोई बढ़ई, कोई कपड़ा बुनने वाला, कोई कुछ कोई कुछ, बल्कि पेशे और व्यापार की इस्लाम में बड़ी प्रशंसा की गई है। तो मियाँ अमानतुल्लाह! इन मूर्खों ने ऐसी बातें कीं तो मुझे ऐसा लगा कि इन्होंने हमारे बुजुर्गों की इज़्जत पर हमला किया। बस मैंने हकीम साहब के हुक्म से सबको मुर्गा बना दिया। जरा ये, सजा भुगत लें, फिर जैसा हकीम साहब का हुक्म होगा वैसा व्यवहार इनके साथ किया जायेगा अच्छा भाई! तुम हमारी परीक्षा में पूरे उतरे, अब तुम ''काम बाग'' चले जाओ, बागवान से मिलो। अल्लाह ने चाहा तो तुम वहाँ भी जांच में पूरे उतरोगे। फिर बागवान तुमको हकीम साहब तक पहुँचा देगा–अच्छा खुदा हाफिज, अस्सलामु अलैकुम।''

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए ''क़ुरआन की शिक्षा'' और ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर आयतों और हदीसों के अनुवाद लिखे हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक़ एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

खर्राटे से बढ़ जाता है बीपी, हार्टअटैक, डायबीटीज जैसी बीमारियों का खतरा

डॉ0 सूर्यकांत

खर्राटा केवल एक सामान्य आदत नहीं, बल्कि गंभीर बीमारियों का संकेत हो सकता है। लोग अक्सर समझते है कि खर्राटे लेने वाला व्यक्ति गहरी और सुकून भरी नींद सो रहा है, जबकि वास्तविकता इसके विल्कुल विपरीत है। खर्राटे लेने वालों की नींद बार-बार टूटती है और शरीर में अ०क्सीजन का स्तर कम हो जाता है, जिससे हृदय, मस्तिष्क सहित शरीर के अन्य अंगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ये बातें रेस्पिरेट्री मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष ड०0 सूर्यकांत ने कही। उन्होंने चेतावनी दी कि लगातार खर्राटे आना अ०ब्स्ट्रक्टिव स्लीप एपनिया (ओएसए) जैसी गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है। ओएसए के कारण हाई ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, डायबीटीज, स्ट्रोक तथा सड़क दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है। दिन में अत्यधिक नींद आना वाहन चालकों के लिए विशेष रूप से खतरनाक है। ड०0 सूर्यकांत ने सलाह दी कि जिन लोगों को तेज खर्राटे आते हैं, वे स्लीप स्टडी अवश्य करवाएं।

❖❖❖

रोबोटिक सर्जरी की सुंदरता निखारने में होगी अहम भूमिका

रोबोटिक सर्जरी का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है और अब तक इसका सबसे अधिक उपयोग जटिल व गंभीर अ०परेशनों में सटीक और बेहतर परिणाम के लिए किया जाता रहा है। आने वाले समय में यह तकनीक चेहरे और शरीर की सुंदरता निखारने में भी अहम भूमिका निभा सकती है। यह जानकारी गुवाहाटी के ड०0 सुभाष खन्ना ने दी।

ड०0 सुभाष खन्ना ने बताया कि रोबोटिक सर्जरी में सर्जन एक विशेष कंसोल के माध्यम से रोबोटिक आर्म्स को नियंत्रित करता है। इससे अत्यंत सूक्ष्म और नियंत्रित चीरे लगाए जा सकते है। इस तकनीक के उपयोग से रक्तस्राव कम होता है, संक्रमण का खतरा घटता है और मरीज की रिकवरी तेज होती है। सर्जरी विभाग के अध्यक्ष ड०0 अभिनव अरुण सोनकर ने कहा कि अब क०स्मेटिक और प्लास्टिक सर्जरी में भी रोबोटिक सिस्टम का दायरा बढ़ेगा। कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव अमित कुमार घोष ने सर्जरी के क्षेत्र में केजीएमयू के चिकित्सकों की सराहना करते हुए शासन स्तर पर हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। ड०0 अक्षय आनंद ने बताया कि रोबोटिक और अन्य आधुनिक तकनीकों से मरीजों का अ०परेशन अधिक सुरक्षित और सरल हुआ है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः **22/03/2026** तاریخ ____________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे अ़ाम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात / अतिया / तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 25 - Issue 02

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3